संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 309
पृष्ठ 8
बुधवार
29 जुलाई 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- एवरग्रीन गजरा देगा भीड़ से...

विचार- मोदी जी की बड़ी हार लेकिन...

खेल- कौन हैं सारांश जैन? 33 साल की उम्र...

सीएम योगी आदित्यनाथ गोरखपुर पहुंचे, बार एसोसिएशन के शपथ ग्रहण समारोह में नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को प्रशस्ति पत्र दिए, बोले-

अधिवक्ता सामान्य नागरिक के विकास के प्रतीक

गोरखपुर,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार दोपहर बाद लगभग 2 बजे गोरखपुर पहुंचे। वहां गुरु गोरखनाथ का पूजन किया। उसके बाद अपने गुरु ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की समाधि स्थल पर जाकर आशीर्वाद लिया। इसके बाद अधिकारियों से विकास परियोजनाओं की जानकारी ली। इसके बाद वह शाम 4 बजे से सिविल कोर्ट बार एसोसिएशन की नई कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। सीएम ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों और सदस्यों को प्रशस्ति पत्र दिए। जनपद न्यायाधीश राजकुमार सिंह ने कहा कि वादों के सापेक्ष जजों की संख्या कम है। 1 अगस्त 2025 में 283120 वाद लंबित थे। इनमें से 27 जुलाई 2026 तक 181372 वाद निस्तारित किए गए हैं। इन वादों के निस्तारण में अधिवक्ताओं का पूरा सहयोग मिला है। 4 राष्ट्रीय लोक अदालत हुईं। इसमें जनपद गोरखपुर प्रथम रहा। यहां 70 कोर्ट स्वीकृत हैं। लेकिन जजों की कमी के कारण 43 कोर्ट ही कार्यरत हैं। कोर्ट रूम की भी कमी है। जनपद कोर्ट में नियुक्त जजों द्वारा निर्धारित लक्ष्य से अधिक केस निस्तारित किए गए हैं। हमारे जजों के न्यायिक कार्यों की निरंतर समीक्षा की जाती है। जिला जज ने कहा कि जो नए कानून लागू किए गए हैं, वे काफी अच्छे हैं। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता में भारत के नागरिकों को वह सुरक्षा दी गई है, जो पहले नहीं था। इस कानून को लागू हुए लगभग 2 वर्ष पूरे हुए हैं। इनमें एनडीपीएस एक्ट के 45 मुकदमे आए हैं।

इसके पहले 175 मुकदमे आए हैं। यह इसलिए है क्योंकि वीडियो रिकार्डिंग की व्यवस्था की गई है। गिरफ्तार होने का लिखित कारण मेमो पुलिस को देना होगा। नया कानून नागरिकों को गलत तरीके से फंसाने से रोकता है। हर केस में फोरेंसिक जांच है।

सीएम योगी ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बधाई देते हुए कहा कि भारत ने स्वतंत्र होने के बाद अपने यहां संसदीय लोकतंत्र को अंगीकार किया। जिसका आधार लोकतंत्र के तीन महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। जिनमें विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका हैं। जब इन तीनों स्तंभों को देखते हैं तो तीनों एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए अपनी लक्ष्मण रेखा के भीतर रहकर पूरी निष्ठा के कार्य करते हैं। इससे एक सामान्य नागरिक लाभान्वित होता है। राष्ट्र की एकता और अखंडता को मजबूत करने में अपना योगदान दे पाते हैं। अधिवक्ता केवल एक मुकदमा नहीं लड़ते बल्कि सामान्य नागरिक के विकास के प्रतीक होते हैं। वे समाज के विधिक सलाहकार भी हैं। वे संविधान के एक सच्चे प्रहरी के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन भी करते हैं। याद रखना विधि का शासन तक आता है जब न्याय की गुणवत्ता हो। न्याय सर्वसुलभ हो और समयबद्ध हो। न्याय की गुणवत्ता के लिए, उसकी सुलभता एवं समयबद्धता के लिए सबसे बड़े वाहक के रूप में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अधिवक्ताओं की होती है। योगी ने कहा कि गोरखपुर सिविल बार की स्थापना का लंबा इंतिहास है। 1898 में इसकी स्थापना हुई थी। देश की आजादी के आंदोलन के दौरानभी गोरखपुर की कचहरी की बड़ी भूमिका थी। उस समय बार एसोसिएशन सिविल कोर्ट के अधिवक्ताओं ने बड़ी भूमिका का निर्वहन किया। यही कारण है कि बार एसोसिएशन सिविल कोर्ट ने स्वाधीनता आंदोलन के बाद भी अलग-अलग क्षेत्र में प्रतिनिधित्व देकर एक नई दिशा देने का काम किया। जिस बार का महत्व इस बात से जोड़ा जाता है कि उसने न्यायमूर्ति दिए, स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी सेनानी दिए हैं। एक समृद्ध विरासत अपनी वर्तमान पीढ़ी के लिए छोड़ा हो, उस बार के साथ जुड़ना हम सबके लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि होती है। योगी ने कहा कि भारत की आजादी के दौरान अधिवक्ताओं की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण थी। उस समय जितने भी बड़े नेता थे, महात्मा गांधी हों, प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू हों, प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद हों, ऐसे कई बड़े नेता अधिवक्ताओं के बीच से निकले हैं। मैं जब भी प्रयागराज जाता हूं। मुझे डा. राजेंद्र प्रसाद की स्मृतियां याद आती हैं। वहां प्रेसीडेंट शूट है। राष्ट्रपति रहते हुए माघ मेले के दौरान डा. राजेंद्र प्रसाद वहां एक महीने तक रहते थे। भारत को 1947 में संपूर्ण स्वतंत्रता मिली थी। मुख्यमंत्री ने कहा कि 12 वर्ष में आपने भारत की बदलती तस्वीर को देखा है। 12 साल पहले दुनिया हमारे बारे में क्या सोचती थी, आज क्या सोचती है, इन दोनों परसेप्शन के बीच 360 डिग्री का अंतर दिखता है। 12 साल पहले भारत, दुनिया की नजर में कमजोर, गरीब, बेरोजगारी वाला, अराजकता वाला व भ्रष्टाचार वाले देश के रूप में पहचाना जाता था।

संसद में शिक्षा, पेपर लीक और विपक्ष के रवैये पर एनडीए सांसद बोले-विपक्ष नहीं कर रहा चर्चा, जनता को कर रहा गुमराह

नयी दिल्ली,एजेंसी। संसद के मानसून सत्र के दौरान शिक्षा और परीक्षा प्रणाली से जुड़े मुद्दों पर राजनीतिक बयानबाजी तेज हो गई है। एनडीए के सांसदों ने विपक्ष पर सदन की कार्यवाही बाधित करने का आरोप लगाया। वहीं, राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने पंजाब में कथित पेपर लीक मामलों को लेकर आम आदमी पार्टी (आप) सरकार और अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधा है। भाजपा सांसद अरुण गोविल ने आईएएनएस से कहा कि विपक्ष ने पहले चर्चा के लिए तैयार होने की बात कही थी लेकिन अब बार-बार अपने रुख से पीछे हट रहा है। उन्होंने कहा कि छात्रों और युवाओं से जुड़ा यह विधेयक बेहद महत्वपूर्ण है और इस पर गंभीर चर्चा होनी चाहिए। अरुण गोविल ने दावा किया कि केंद्र सरकार ने युवाओं के हित में कई ठोस कदम उठाए हैं। उन्होंने युवाओं से राजनीति से दूर रहने और अपनी समस्याओं के समाधान के लिए सरकार पर भरोसा रखने की अपील करते हुए कहा कि सरकार का दृष्टिकोण सकारात्मक है। वहीं, राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने पंजाब में पिछले पांच वर्षों के दौरान कथित तौर पर छह बार पेपर लीक होने और बड़े पैमाने पर नकल कराने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इन मामलों में अब तक किसी की जवाबदेही तय नहीं की गई है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान इन घटनाओं से इनकार कर रहे हैं, जबकि वास्तविकता इससे अलग है। स्वाति मालीवाल ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर भी निशाना साधते हुए कहा कि पंजाब के मुद्दे पर उन्होंने पूरी तरह चुप्पी साध रखी है। उन्होंने आरोप लगाया कि शिक्षा में जवाबदेही की मांग को लेकर अभियान चलाने वाले लोग पंजाब में कथित पेपर लीक के मामलों पर कुछ नहीं बोल रहे हैं। साथ ही, उन्होंने दावा किया कि केजरीवाल ने अपने सहयोगियों के माध्यम से एक संगठन खड़ाकर शिक्षा के मुद्दे पर माहौल बनाने की कोशिश की लेकिन पंजाब के मामलों में वही लोग मौन हैं।

एंटी-पेपर लीक बिल पर चर्चा, जितेंद्र सिंह बोले- परीक्षा लीक करने वालों को अब 5 महीने में मिलेगी सजा

नयी दिल्ली लोकसभा में मंगलवार को पब्लिक एग्जामिनेशंस (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) (संशोधन) विधेयक, 2026 पर चर्चा शुरू हुई। केंद्रीय राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने विधेयक पेश करते हुए कहा कि इसका उद्देश्य पेपर लीक, संगठित परीक्षा घोटालों और अन्य अनुचित गतिविधियों पर पहले से अधिक प्रभावी ढंग से रोक लगाना है। उन्होंने कहा कि सरकार छात्रों के भविष्य से किसी भी तरह का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं करेगी। जितेंद्र सिंह ने कहा कि यह विधेयक पब्लिक एग्जामिनेशंस (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट, 2024 में संशोधन के लिए लाया गया है। उन्होंने बताया कि 2024 का कानून परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता और शुचिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बनाया गया था, लेकिन अब उसे और मजबूत करने की जरूरत महसूस हुई। प्रधानमंत्री के निर्देश के बाद सरकार यह संशोधन लेकर आई है ताकि पेपर लीक जैसी घटनाओं पर पूरी तरह रोक लगाई जा सके। उन्होंने कहा कि पेपर लीक की घटनाएं किसी एक राज्य तक सीमित नहीं रही हैं। अलग-अलग राज्यों और अलग-अलग परीक्षाओं में पहले भी ऐसे मामले सामने आते रहे हैं। हालांकि, पहले इस तरह की सख्त कार्रवाई नहीं होती थी जैसी अब की जा रही है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए केंद्रीय राज्यमंत्री ने कहा कि 2009 के रेलवे भर्ती परीक्षा पेपर लीक से लेकर 2012 के एम्स प्रवेश परीक्षा पेपर लीक तक कई बड़े मामले कांग्रेस सरकार के समय सामने आए। उन्होंने कहा कि इन्हीं घटनाओं से सबक लेते हुए सरकार ने एक लीकप्रूफ परीक्षा प्रणाली तैयार करने का फैसला किया।

नाबालिग प्रदर्शनकारियों को तुरंत रिहा करें : सुप्रीम कोर्ट

छात्रों का आंदोलन शांतिपूर्ण था, जरूरत से ज्यादा बल प्रयोग करने वालों पर कार्रवाई हो

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पेपर लीक मामले को लेकर देशभर में हुए छात्र आंदोलनों के दौरान पुलिस की कथित ज्यादती के आरोपों पर सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को अंतरिम आदेश जारी किया है। अदालत ने 18 वर्ष से कम उम्र के ऐसे छात्र प्रदर्शनकारियों को रिहा करने का निर्देश दिया है, जिनका कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। साथ ही, पात्र छात्रों के खिलाफ किसी भी तरह की जबरन कार्रवाई पर रोक लगाने के आदेश दिए हैं।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि छात्रों पर पुलिस की कथित ज्यादती के आरोप प्रथम दृष्टया निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच की मांग करते हैं। अदालत ने कहा कि पूरे मामले की पारदर्शी जांच के लिए आगे चलकर स्वतंत्र समिति या विशेष जांच दल (SIT) के गठन पर भी विचार किया जा सकता है। न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ ने उन सभी राज्यों को निर्देश दिया, जहां प्रदर्शन हुए थे, कि सीसीटीवी फुटेज, ड्रोन रिकॉर्डिंग, बॉडी कैमरा फुटेज, वायरलेस संचार रिकॉर्ड, पीसीआर लॉग और अन्य इलेक्ट्रॉनिक व डिजिटल साक्ष्यों को सुरक्षित रखा जाए। अदालत ने यह भी कहा कि प्रदर्शनकारियों से जुड़ा डिजिटल डेटा सुरक्षित रखा जाए, लेकिन उसे सार्वजनिक न किया जाए। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि जबरन कार्रवाई से राहत केवल उन छात्र प्रदर्शनकारियों को मिलेगी, जिनका कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। अदालत ने कहा कि यह सुरक्षा आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों पर लागू नहीं होगी। पीठ ने दिल्ली सरकार को दर्ज एफआईआर की जांच जारी रखने की अनुमति दी, लेकिन कहा कि सुनवाई पूरी होने तक पात्र छात्र प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कोई जबरन कार्रवाई नहीं की जाएगी।

बांकीपुर उपचुनाव : तेजस्वी यादव का बड़ा दावा, बोले- राजद की जीत साफ

पटना (एजेंसी)। बिहार में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने मंगलवार को भरोसा जताया कि उनकी पार्टी बिहार में होने वाले बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव में जीत हासिल करेगी। यादव ने कहा कि हम साफ तौर पर चुनाव जीतने जा रहे हैं। बाद में पत्रकारों से बात करते हुए, आरजेडी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भाजपा पर बांकीपुर निर्वाचन क्षेत्र के युवाओं, किसानों और महिलाओं को धोखा देने का आरोप लगाया। यादव ने सिवान में नीट विरोध प्रदर्शन के दौरान भीड़ को नियंत्रित करने के लिए सुरक्षा बलों द्वारा कथित तौर पर एके-47 राइफलों के इस्तेमाल की औपचारिक न्यायिक जांच की मांग की। उन्होंने कहा कि पार्टी के सदस्य और हमारे उम्मीदवार लगातार चुनाव क्षेत्र में प्रचार कर रहे हैं... जब चुनाव में किए गए वादों की बात आती है, जैसे करोड़ों नौकरियां देना या महिलाओं को 2 लाख देना, तो भाजपा के वादों और असल में जमीन पर जो हुआ, उसके बीच बहुत बड़ा फर्क रहा है... हमें पूरा भरोसा है कि हम यह चुनाव जीतेंगे। लोग देख रहे हैं कि भाजपा ने युवाओं, किसानों और महिलाओं को कैसे धोखा दिया है... दूसरी बात, हमने जो मांगें रखी थीं, उन्हें लेकर हमने सरकार को अल्टीमेटम दिया था। मैंने खुद मुख्यमंत्री को संदेश भेजकर चेतावनी दी थी कि अगर हमारी मांगें नहीं मानी गईं तो बड़ा आंदोलन होगा।

काजीगुंड में फंसे सैकड़ों अमरनाथ यात्री, यात्रा रोकी गई

कुलगाम,एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में भूस्खलन और पहाड़ी से पत्थर गिरने के कारण जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग बंद हो गया है। इसके चलते अमरनाथ यात्रा से लौट रहे सैकड़ों श्रद्धालु काजीगुंड के मीर बाजार स्थित यात्री निवास में फंस गए हैं। बाबा बर्फानी के दर्शन करने के बाद वे अपने घरों की ओर लौट रहे थे, लेकिन रास्ते में हाईवे बंद होने के कारण उन्हें रुकना पड़ा। कई श्रद्धालुओं का कहना है कि वे पिछले एक-दो दिनों से यातायात खुलने का इंतजार कर रहे हैं। महाराष्ट्र से आए एक बुजुर्ग तीर्थयात्री ने बताया कि उन्होंने सफलतापूर्वक अमरनाथ यात्रा पूरी कर ली है। उन्होंने कहा कि रास्ता बंद होने के कारण थोड़ी परेशानी हो रही है, लेकिन सरकार की ओर से लंगर, रहने और अन्य जरूरी सुविधाओं की अच्छी व्यवस्था की गई है। उन्होंने सुरक्षा व्यवस्था की भी तारीफ करते हुए कहा कि श्रद्धालुओं को किसी तरह का डर नहीं है। उन्होंने बताया कि यात्री निवास में बड़ी संख्या में लोग रुके हुए हैं। अनुमान के मुताबिक यहां करीब एक हजार से डेढ़ हजार श्रद्धालु मौजूद हैं। प्रशासन की ओर से हर संभव सहायता दी जा रही है, लेकिन सभी को रास्ता खुलने का इंतजार है।

वहीं, गोविंद कुमार नामक एक तीर्थयात्री ने बताया कि उनकी यात्रा बहुत अच्छी रही। दर्शन के दौरान किसी तरह की परेशानी नहीं हुई, लेकिन वापसी के समय यातायात जाम के कारण दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

उन्होंने बताया कि एक दिन से ज्यादा समय से वे रास्ता खुलने का इंतजार कर रहे हैं। हालांकि, उन्होंने सुरक्षा इंतजामों को बेहतर बताया और कहा कि प्रशासन तथा सुरक्षाबलों की व्यवस्था में कोई कमी नहीं है।

उन्होंने बताया कि पहले उन्हें काजीगुंड में रुकने के लिए कहा गया था। बाद में वे श्रीनगर गए और वहां होटल में ठहरे। उनकी मुख्य समस्या केवल यह है कि बंद मार्ग के कारण आगे बढ़ना संभव नहीं हो पा रहा है।

लोकसभा में अखिलेश यादव का सरकार पर हमला, बोले-

छात्रों के आंदोलन ने झुकाई सरकार, अब सभी वादे पूरे किए जाएं

नयी दिल्ली,एजेंसी। पेपर लीक से जुड़े संशोधन विधेयक पर लोकसभा में चर्चा के दौरान समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और कन्नौज सांसद अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि हाल के छात्र आंदोलन ने यह साबित कर दिया कि लोकतांत्रिक तरीके से उठाई गई आवाज सरकार को फैसले बदलने के लिए मजबूर कर सकती है। उन्होंने आंदोलन में शामिल युवाओं की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी एकजुटता और शांतिपूर्ण संघर्ष से सरकार को झुकने पर मजबूर किया।

अखिलेश यादव ने सरकार से मांग की कि आंदोलन के दौरान जिन मुद्दों पर सहमति बनी है, उन्हें केवल आश्वासन तक सीमित न रखा जाए, बल्कि संसद के माध्यम से उन्हें लागू भी किया जाए।

लोकसभा में अपने संबोधन की शुरुआत करते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि वह पूरे छात्र आंदोलन पर लगातार नजर बनाए हुए थे। उन्होंने कहा कि आंदोलन के दौरान एक नारा लगातार सुनाई दे रहा था कि सरकार को झुकाया जा सकता है और अंततः ऐसा हुआ भी। उन्होंने कहा कि लंबे समय तक सरकार यह संदेश देती रही कि वह किसी दबाव के आगे नहीं झुकती, लेकिन छात्रों के शांतिपूर्ण आंदोलन के बाद परिस्थितियां बदलीं। अखिलेश ने कहा कि यह लोकतंत्र की ताकत है कि जनता की आवाज अंततः सुनी जाती है। सपा प्रमुख ने कहा कि यदि सरकार ने आंदोलनकारियों के साथ बातचीत में कुछ मांगों पर सहमति जताई है तो अब उन वादों को अमल में भी लाया जाना चाहिए। उन्होंने उम्मीद जताई कि सरकार उन परिवारों के लिए भी उचित कदम उठाएगी, जिनके बारे में आंदोलन के दौरान मुआवजे की मांग उठाई गई थी। उन्होंने कहा कि संसद को भी इस विषय पर स्पष्ट जानकारी दी जानी चाहिए ताकि सभी पक्षों के बीच पारदर्शिता बनी रहे। अखिलेश यादव ने सरकार की शिक्षा नीति पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि यदि परीक्षा प्रणाली को सुरक्षित बनाने का दावा किया जा रहा है तो पहले यह भी देखा जाना चाहिए कि पेपर लीक जैसी घटनाएं लगातार क्यों हो रही हैं। उन्होंने कहा कि सरकार को केवल कानून बनाने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि ऐसी व्यवस्थाएं भी विकसित करनी चाहिए जिससे प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता बनी रहे और युवाओं का भरोसा कायम रहे। लोकसभा में बोलते हुए अखिलेश यादव ने प्राथमिक शिक्षा की स्थिति को लेकर भी चिंता व्यक्त की। उन्होंने दावा किया कि बड़ी संख्या में सरकारी प्राथमिक विद्यालय बंद हुए हैं और इसका असर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा पर पड़ा है। उन्होंने शिक्षक भर्ती प्रक्रिया का भी उल्लेख करते हुए आरोप लगाया कि भर्ती से जुड़े मामलों में पारदर्शिता और निष्पक्षता को लेकर लगातार सवाल उठते रहे हैं। उनके अनुसार, युवाओं को समय पर रोजगार उपलब्ध कराना सरकार की जिम्मेदारी है।

एक माह से जला ट्रांसफार्मर, ग्रामीण परेशान

प्रयागराज। यमुनापार क्षेत्र के कोरांव तहसील अंतर्गत खपटिहा गांव में 25 केवीए का बिजली ट्रांसफार्मर एक माह से अधिक समय से जला पड़ा है। ट्रांसफार्मर न बदलने से ग्रामीणों को अंधेरे में रात गुजारने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि शिकायत और सूचना देने के बावजूद बिजली विभाग के जिम्मेदार अधिकारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। ग्रामीण सुनील कुमार दुबे ने बताया कि ट्रांसफार्मर जलने के बाद नियमानुसार ऑनलाइन शिकायत सब विद्युत केंद्र गौरा में दर्ज कराई गई है। इसके अलावा संबंधित अवर अभियंता (जेई) को भी मौखिक रूप से सूचना दी गई लेकिन अब तक ट्रांसफार्मर नहीं बदला गया। बरसात के मौसम में बिजली न होने से गांव में रात के समय अंधेरा छाया रहता है। ऐसे में जहरीले जंतुओं का डर बना रहता है। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए संबंधित बिजली विभाग के उच्चाधिकारियों को तत्काल जला हुआ ट्रांसफार्मर बदलवाने का निर्देश देने की मांग की है।

संगठन मजबूती के लिए एकजुटता जरूरी: संदीप पटेल

प्रयागराज। लखनपुर में सोमवार को इलाहाबाद–झांसी खंड स्नातक चुनाव के संबंध में सपा कार्यकर्ताओं ने बैठक कर आगे की रणनीति तय की। मेजा के विधायक संदीप पटेल ने कहा कि संगठन मजबूती के लिए एकजुटता जरूरी है। किसी भी चुनाव में बूथ, ब्लॉक और सेक्टर प्रभारियों की भूमिका अहम होती है। बैठक में आगामी एमएलसी चुनाव के लिए कई बिंदुओं पर चर्चा की गई। बैठक का संचालन सपा नेता नितेश तिवारी ने किया। सपा मेजा विधानसभा अध्यक्ष विजयराज यादव ने अतिथियों के प्रति आभार जताया। बैठक में डॉ. मान सिंह यादव, सपा के जिलाध्यक्ष पप्पू लाल निषाद, जिला पंचायत सदस्य जय शंकर भारतीया, गीता भारतीया आदि मौजूद रहीं।

धर्म पाल प्रदेश अध्यक्ष व हीरालाल महासचिव बने

प्रयागराज। भूमिहीन किसान मजदूर समिति के राज्य सम्मेलन के दूसरे दिन 13 सदस्यीय राज्य समिति का चुनाव हुआ। इस

दौरान धर्म पाल प्रदेश अध्यक्ष और हीरालाल महासचिव चुने गए। सम्मेलन में न्यूनतम मजदूरी बढ़ाने, माफिया की लूट पर रोक और यमुना में बालू खनन शुरू करने का आह्वान किया गया। साथ ही शिक्षा सुधार पर भी जोर दिया गया। इसके अलावा केन– बेतवा रिवर लिंकिंग प्रोजेक्ट का विरोध करने का प्रस्ताव पारित किया। अंत में एआईकेएमएस के पूर्व अध्यक्ष हरदेव सिंह संधू के निधन पर शोक जताया गया।

जल जीवन मिशन की टंकी निर्माण पर ग्रामीणों का विरोध

प्रयागराज। शीतलापुर गांव में जल जीवन मिशन की पानी टंकी के निर्माण पर ग्रामीणों में नाराजगी है। सोमवार को उन्होंने निर्माण स्थल पर विरोध जताया। ग्रामीणों का आरोप है कि 10 फीट गहरे गड्ढे में टंकी बन रही है। गड्ढे में पानी भरने से निर्माण

गुणवत्ता प्रभावित होने की आशंका है। जलभराव वाले स्थान पर टंकी बनाना उचित नहीं है। बरसात में गड्ढे में पानी भरने से भवन की मजबूती व सुरक्षा पर असर पड़ेगा। उन्होंने निर्माण की जांच और टंकी को सुरक्षित, ऊंचे व समतल स्थान पर बनाने की मांग की। विरोध में मनीराम पटेल, सुरेश प्रजापति, मनोज यादव, डॉ. विनोद, हरिश्चंद्र पटेल, शिवचंद्र पटेल, धर्मेंद्र पटेल, अजय कुमार, राजू सरोज समेत कई ग्रामवासी शामिल थे। ग्रामीणों ने अधिकारियों से उचित कार्रवाई की मांग की।

सरकारी जमीनों पर अवैध कब्जे की कार्यवाही से समझौता नहीं: रोशनी सोलंकी

प्रयागराज। चक मार्ग, नाली, खलिहान, खाद, गड्ढे, श्मशान, तालाब आदि जगहों पर हो रहे अवैध कब्जे की कार्यवाही पर कोई समझौता नहीं होगा। शिकायत मिलने पर संबंधित बिंदुओं की नाप कराकर पारदर्शिता से न्याय होगा। किसी भी पक्षकार का नुकसान

नहीं होने दिया जाएगा। यह बातें तहसीलदार कोरांव रोशनी सोलंकी ने पत्रकारों के साथ एक बातचीत के दौरान कही। उन्होंने कहा कि सरकारी जमीनों का अतिक्रमण आमजनमानस की समस्या का कारण बनी हुई है।किसानों के सामने यूरिया डीएपी खाद की गंभीर समस्याओं पर चर्चा करते हुए कहा कुछ समितियों की जांच की गई है। निर्धारित मूल्य से अधिक दाम पर खाद बेचने वालों की जांच की जा रही है। शिकायत मिलने पर भेदभाव रहित फरियादियों के साथ न्याय होगा।

संगम से बाबा काशी विश्वनाथ के जलाभिषेक के लिए जल लेकर रवाना हुए श्रद्धालु

प्रयागराज। प्रयागराज संगम से बाबा काशी विश्वनाथ के जलाभिषेक के लिए श्रद्धालु जल लेकर रवाना हुए। इस दौरान श्रद्धालुओं ने श्हर हर महादेवश के जयकारे लगाए।

सावन के पवित्र महीने में श्रद्धालु बाबा काशी विश्वनाथ का जलाभिषेक करने के लिए प्रयागराज संगम से रवाना हुए। उन्होंने संगम के पवित्र जल को अपने पात्रों में भरा। यह एक प्राचीन और महत्वपूर्ण परंपरा है जिसका पालन भक्तगण हर साल करते हैं।

श्रद्धालुओं ने श्हर हर महादेवश के जयकारे लगाए। इन जयकारों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। जयकारों के बीच उन्होंने श्रद्धापूर्वक जल संग्रह किया। भक्तों ने बताया कि वे प्रत्येक वर्ष सावन मास में यह यात्रा करते हैं। प्रयागराज से जल लेकर बाबा काशी विश्वनाथ को अर्पित करने की विशेष महत्ता है। यह अनुष्ठान उनकी गहरी आस्था और समर्पण को दर्शाता है। इस परंपरा के अनुसार,

सावन में बाबा को जल प्रयागराज से ही चढ़ाया जाता है। यह यात्रा भक्तों के लिए आध्यात्मिक महत्व रखती है।

परंपरा का इतिहास

यह पवित्र परंपरा आदिगुरु शंकराचार्य ने शुरू की थी। उन्होंने इस अनुष्ठान को स्थापित किया था। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। इसका पालन आज भी बड़ी श्रद्धा के साथ किया जाता है।

श्रद्धालुओं की आस्था

श्रद्धालु दूर–दूर से प्रयागराज संगम पहुंचते हैं। वे इस पवित्र जल को बाबा के चरणों में अर्पित करने के लिए आते हैं। यह यात्रा उनकी अटूट आस्था का प्रतीक है। भक्तगण पैदल चलकर अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। वे मानते हैं कि इस जल से बाबा का अभिषेक करने से मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

असिस्टेंट प्रोफेसर और प्रधानाध्यापक भर्ती अधियाचन वापस, अर्हता व पद सृजन पर आपत्ति

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग ने असिस्टेंट प्रोफेसर कुक्कुट पालन विषय के अधियाचन को वापस कर दिया है। यह अधियाचन उच्च शिक्षा निदेशालय ने बिना पद सृजन के भेजा था।

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग ने असिस्टेंट प्रोफेसर कुक्कुट पालन विषय के अधियाचन को वापस कर दिया है। यह अधियाचन उच्च शिक्षा निदेशालय ने बिना पद सृजन के भेजा था। आयोग ने एडेड माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापक और प्रधानाचार्य के 2643 पदों के अधियाचन पर भी आपत्ति जताई है। इन आपत्तियों के कारण भर्ती प्रक्रिया में देरी हो रही है।

उच्च शिक्षा निदेशालय ने 111 प्राचार्य और 44 विषयों में 2107 असिस्टेंट प्रोफेसर पदों के लिए अधियाचन ई–पोर्टल पर अपलोड किया था। भर्ती विज्ञापन जारी करने से पहले चयन आयोग ने पूरे मामले का परीक्षण किया। आयोग के विषय विशेषज्ञों ने पाया कि कुक्कुट विषय के अधियाचन गोरखपुर और गाजीपुर के एडेड महाविद्यालयों से आए थे। ये अधियाचन दरअसल पशुपालन और दुग्ध विभाग से संबंधित थे।

शिक्षा सेवा चयन आयोग के उप सचिव संजय सिंह ने बताया कि अधियाचन आपत्ति के साथ निदेशालय को वापस कर दिए गए हैं। इसके बाद उच्च शिक्षा

निदेशालय ने सह विषय (एलाइड सब्जेक्ट) के निर्धारण के लिए पत्र लिखा है। सहायक निदेशक डॉ. बीएल शर्मा ने भी अधियाचन वापसी की पुष्टि की। उन्होंने बताया कि शासन को सह विषय के तहत समिति गठित करने के लिए पत्र भेजा गया है। इस समिति में शासन, निदेशालय और आयोग के प्रतिनिधि शामिल होंगे।

प्रधानाध्यापक और प्रधानाचार्य भर्ती पर आपत्ति

एडेड माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापक और प्रधानाचार्य के 2643 पदों पर भर्ती होनी है। उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग ने इन पदों के अधियाचन को भी वापस कर दिया है। इसका मुख्य कारण शैक्षिक अर्हता (डिग्री, डिप्लोमा या प्रमाण पत्र) का स्पष्ट न होना है। अपर शिक्षा निदेशक माध्यमिक कामता राम पाल ने बताया कि आवश्यक संशोधन के बाद ही अधियाचन भेजा गया था। उन्होंने कहा कि जो आपत्तियां हैं, उनमें सुधार किया जाएगा ताकि भर्ती प्रक्रिया आगे बढ़ सके।

अर्हता निर्धारण के लिए आयोग का पत्र

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग के सचिव ने जून में प्रमुख सचिव को एक महत्वपूर्ण पत्र लिखा था। यह पत्र चयन आयोग नियमावली 2023 के नियम 22 में संशोधन के संबंध में था। इसमें अध्यक्षों के लिए शैक्षिक अर्हताएं, आरक्षण और अधियाचन में संशोधन का उल्लेख किया गया था। नियमावली के नियम 22 के अनुसार, प्राचार्य, प्रधानाचार्य और प्रधानाध्यापक पदों के लिए अभ्यर्थियों की अर्हताएं सुसंगत अधिनियमों, सेवा नियमावली और विश्वविद्यालय परिनियमावली के अनुसार होंगी। आयोग अर्हता को लेकर संशोधन की संस्तुति पहले ही कर चुका है।

सह विषय समिति का महत्व

उच्च शिक्षा निदेशालय ने सह विषय (एलाइड सब्जेक्ट) के निर्धारण के लिए आयोग, निदेशालय और विषय विशेषज्ञ की एक समिति बनाने का प्रस्ताव दिया है। ऐसी समिति राजकीय महाविद्यालयों के लिए होने वाली भर्ती में पहले भी बनाई जा चुकी है। लोक सेवा आयोग की ओर से राजकीय महाविद्यालय में 23 विषयों की भर्ती में भी ऐसी ही समिति गठित हुई थी। समिति के गठन के बाद ही उन भर्तियों की प्रक्रिया सुचारु रूप से शुरू हो पाई थी। यह समिति भविष्य में अधियाचनों से संबंधित विवादों को सुलझाने में सहायक होगी।

रामगढ़ में नालियों के जाम होने से बढ़ी परेशानी

प्रयागराज। ग्राम पंचायत रामगढ़ की अहिरान व कुशवाहा बस्ती में पांच वर्षों से बदहाल सफाई व्यवस्था और जाम नालियों से ग्रामीण परेशान हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि नालियों की न तो नियमित सफाई हुई है और न ही मरम्मत। इससे गलियों और घरों के सामने गंदा पानी जमा रहता है।

बरसात में समस्या बढ़ने से दुर्गंध, मच्छरों का प्रकोप और संक्रामक बीमारियों का खतरा है। ग्रामीण राजेश सुधाकर, रमाशंकर, पवन, चंद्रिका प्रसाद कुशवाहा और छोटेलाल कुशवाहा सहित अन्य लोगों ने तत्काल सफाई और क्षतिग्रस्त नालियों के पुनर्निर्माण की मांग की। खंड विकास अधिकारी (बीडीओ) राजेश कुमार ने बताया कि मामले की जांच कराई जाएगी। यदि जांच में शिकायत सही पाई जाती है तो तत्काल आवश्यक कार्रवाई करते हुए नालियों की सफाई, मरम्मत तथा अन्य जरूरी व्यवस्थाएं कराई जाएगी।

भीरपुर की अहिरान और कुशवाहा बस्ती में सड़क बदहाल

ग्राम पंचायत रामगढ़ की अहिरान और कुशवाहा बस्ती में बुनियादी सुविधाओं की अनदेखी से ग्रामीण नाराज हैं। करीब 20 वर्ष पुराना खड़ंजा जर्जर हो चुका है, जिससे

राहगीर अक्सर चोटिल होते हैं। पिछले पांच वर्षों से मार्ग की मरम्मत नहीं हुई है।

जगह–जगह गड्ढे होने से पैदल चलना मुश्किल है, बरसात में दुर्घटना का खतरा बढ़ जाता है। ग्रामीणों ने सफाई व्यवस्था पर भी सवाल उठाए हैं, आरोप है कि सफाईकर्मी नियमित नहीं आते जिससे नालियां जाम हैं।

पूर्व प्रधान रामजी यादव सहित राजेश, सुधाकर, रमाशंकर, पवन, चंद्रिका प्रसाद कुशवाहा और छोटेलाल कुशवाहा ने प्रशासन से सड़क मरम्मत और सफाई की मांग की है। करछना के खंड विकास अधिकारी राजेश कुमार ने मामले की जांच कराकर आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

हेपेटाइटिस बी का परिवार में खतरा अधिक

प्रयागराज। मंगलवार को विश्व हेपेटाइटिस दिवस मनाया गया। विशेषज्ञों के अनुसार बदलती जीवनशैली व खान–पान ने लिवर स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। हेपेटाइटिस–बी संक्रमण जैसे गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। रोगियों के बचाव के लिए नियमित जांच, स्वच्छता और टीकाकरण आवश्यक है। लिवर जैसे खास अंग को गंभीर बीमारियों से बचाने के प्रति जागरूकता के लिए मंगलवार को विश्व हेपेटाइटिस दिवस मनाया जाएगा। गैस्ट्रोएंटरोलॉजिस्ट के अनुसार बदलती जीवन शैली व खान–पान में हो रहे बदलाव का प्रभाव लिवर पर पड़ रहा है। लगातार बाहर का खाना खाने, साफ पानी न पीने, शराब व धूम्रपान का नियमित सेवन करने व टीकाकरण न कराने से लिवर खराब हो रहा है। साथ ही हेपेटाइटिस संक्रमण, फैटी लिवर, लिवर सिरोसिस व लिवर कैंसर जैसी बीमारियों के चपेट में भी लोग आ रहे हैं। इसमें हेपेटाइटिस–बी जैसी गंभीर बीमारी तो साइलेंट किलर की तरह प्रभावित कर रही है। अगर परिवार में किसी को भी हेपटाइटिस–बी का संक्रमण रहा है तो उस परिवार के दूसरे सदस्यों में हेपटाइटिस–बी के संक्रमण का खतरा अधिक बढ़ जाता है। मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग के गैस्ट्रोएंटरोलॉजिस्ट डॉ. एसके प्रजापति ने बताया कि हेपेटाइटिस–बी लिवर का एक वायरस संक्रमण है। इसके लक्षण सामान्य तौर पर स्पष्ट नहीं होते हैं। समय से जांच व उपचार न होने परे लिवर कैंसर हो सकता है। एसआरएन अस्पताल की ओपीडी में हर माह 150 से 200 मरीज हेपेटाइटिस–बी से पीड़ित आते हैं। उन्होंने कहा कि मरीज को यदि लगातार बुखार, थकान, भूख कम लगना, उल्टी, पेट दर्द, गहरे रंग का पेशाब, आंख और त्वचा में पीलापन की शिकायत हो तो हेपेटाइटिस की जांच जरूर करानी चाहिए।

80 फीट ऊंची पानी की टंकी पर चढ़ा वृद्ध, पुलिस ने बचाया

प्रयागराज। घूरपुर थाना क्षेत्र के तातारगंज गांव में सोमवार सुबह हड़कंप मच गया जब एक 70 वर्षीय वृद्ध 80 फीट ऊंची पानी की टंकी पर चढ़ गया। पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से उसे सुरक्षित नीचे उतारा। वृद्ध टंकी पर अजीबोगरीब हरकतें कर रहा था, जिससे ग्रामीणों का ध्यान आकर्षित हुआ। यह खबर पूरे गांव में फैलते ही लोगों में दहशत फैल गई। सूचना मिलने पर घूरपुर पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची। पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से कड़ी मशक्कत के बाद वृद्ध को नीचे उतारा। नीचे उतरने के बाद उसकी पहचान बसहरा गांव निवासी सुनील पटेल के रूप में हुई। सुनील पटेल की उम्र 70 वर्ष बताई गई है।

ग्रामीणों ने बताया कि सुनील पटेल पिछले एक सप्ताह से मानसिक रूप से परेशान चल रहे थे। वह इधर–उधर घूमते रहते थे और उनकी मानसिक स्थिति विचित्र थी। इसी दौरान वह रविवार रात तातारगंज की पानी की टंकी पर चढ़ गए थे। पुलिस ने वृद्ध को नीचे उतारने के बाद उसके परिजनों को सौंप दिया।

बालू खनन की शिकायत पर युवक को दी धमकी

प्रयागराज। धरवारा और सुलमई गांव में टोंस नदी से कथित अवैध बालू खनन और भंडारण का मामला एक बार फिर सुर्खियों में है। अवैध बालू कारोबार की शिकायत करने वाले एक युवक को फोन पर कथित तौर पर धमकी देने का आरोप है। सोशल मीडिया पर एक ऑडियो वायरल होने के बाद क्षेत्र में तरह–तरह की चर्चाएं तेज हो गई हैं। वायरल ऑडियो में शिकायत वापस लेने का दबाव बनाने की जा रही है। बातचीत के दौरान स्थानीय पुलिस और प्रशासन पर भी कई दावे किए गए हैं। अमर उजाला वायरल ऑडियो की पुष्टि नहीं करता है। ग्रामीणों का आरोप है कि बारिश शुरू होने से पहले टोंस नदी से मशीनों के जरिये बड़े पैमाने पर बालू निकालकर विभिन्न स्थानों पर डंप कर दी गई थी। अब बरसात में बालू के दाम बढ़ने पर उसी स्टॉक को ऊंचे दामों पर बेचा जा रहा है। रात के समय ओवरलोड डंपर और ट्रक बिना वैध अभिलेखों के बालू लेकर क्षेत्र से बाहर निकलते हैं, जिससे सरकार को राजस्व का नुकसान हो रहा है।

मरम्मतीकरण के लिए बाधित रहेगी बिजली आपूर्ति

प्रयागराज। उपकेंद्र कौड़िहार के कंजिया फीडर पर बिजनेस प्लान अंतर्गत मरम्मतीकरण का कार्य हो रहा है। इसके लिए 28 जुलाई को सुबह 11 से शाम पांच बजे तक कंजिया (ग्रामीण) और कौड़िहार टाउन की बिजली आपूर्ति बाधित रहेगी। यह जानकारी उपखंड अधिकारी जेके यादव और उपकेंद्र अवर अभियंता रवि कुमार पटेल ने दी है। उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओं का सहयोग अपेक्षित है, कष्ट के लिए खेद है।

जगतपुर में मोटर खराब, गांवों में पानी का संकट

प्रयागराज। क्षेत्र में पेयजल योजना का मोटर खराब होने से तीन दिनों से पानी की आपूर्ति ठप है। इससे दर्जनों गांवों में पानी संकट गहरा गया है। ग्रामीणों को एक बाल्टी पानी के लिए दूर–दराज के हैंडपंपों पर जाना पड़ रहा है। बलरामपुर, बरेठी, गोपालपुर, मंडौर, जगतपुर, कैथवल और पहाड़पुर के ग्रामीणों ने बताया कि सूचना देने के बावजूद विभागीय अधिकारी समस्या पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। बरेठी क्षेत्र के संदीप, राजेश, दिनेश और निर्मल ने मोटर की मरम्मत कराकर शीघ्र पानी की आपूर्ति बहाल कराने की मांग की है। जल निगम के अवर अभियंता महेंद्र प्रताप ने बताया कि मोटर की मरम्मत जल्द करवाई जाएगी।

जब भी पाल प्रदेश अध्यक्ष बना, बसपा की सरकार बनी: विश्वनाथ

प्रयागराज। कोरांव बाजार के भागीरथी गेस्ट हाउस में सोमवार को बसपा की सेक्टर व बूथ समीक्षा बैठक हुई। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष विश्वनाथ पाल ने कहा कि जब भी कोई पाल प्रदेश अध्यक्ष बना, बसपा की सरकार बनी है। उन्होंने कहा कि पाल को अध्यक्ष

बनाना बहन मायावती का सरकार बनाने का संकेत है। बसपा सरकार पिछड़े, दलित, शोषित और वंचित समाज को शत प्रतिशत भागीदारी देती है। बहन मायावती ने सभी समाज के लोगों को सम्मान दिया है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से विधानसभा चुनाव की तैयारियों में अभी से जुटने की अपील की। उन्होंने सेक्टर व बूथ पदाधिकारियों से सक्रियता से कार्य करने को कहा। मौके पर विजय प्रताप, सतीश जाटव, चिंतामणि वर्मा, लालता पाल और रामकुमार कुशवाहा आदि रहे।

चार साल बाद भी नहीं हुई सड़क मरम्मत

प्रयागराज। मुस्लिम बस्ती की तरफ जाने वाली ध्वस्त सड़क की मरम्मत शिकायत के बावजूद चार साल के बाद भी नहीं की गई। जिससे बारिश के समय बस्ती के लोगों को आने–जाने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसकी शिकायत लोक निर्माण विभाग के अभियंताओं से संपूर्ण समाधान दिवस में भी कई बार की गई लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। इस सड़क पर डामर की जगह गिट्टियां बिखरी हुई हैं। कस्बे के महताब अली ने बताया कि चार साल बाद भी इस सड़क का मरम्मत नहीं कराया जा सका। जिससे सड़क पूरी तरह से ध्वस्त हो गई है।

संक्षिप्त

सूचना निदेशक द्वारा सभी को समान विज्ञापन देने का आश्वासन

लखनऊ (संवाददाता)। मान्यता प्राप्त पत्रकार एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिनेश त्रिवेदी ने सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के निदेशक विशाल सिंह को ज्ञापन देकर मांग की है कि उत्तर प्रदेश के सभी डीएवीपी मान्यता एवं सूचीबद्ध समाचार पत्रों को नियमित विज्ञापन जारी करने की व्यवस्था की जाय। और साथ ही मांग पत्र के आधार पर विज्ञापन देने की प्रथा समाप्त की जाय। इससे दूर दराज के डीएवीपी मान्यता एवं सूचीबद्ध समाचार पत्रों को भी समुचित लाभ मिलेगा तथा सरकार की सबका साथ सबका विकास की नीति का भी अक्षरशः पालन होगा। निदेशक विशाल सिंह ने मान्यता प्राप्त पत्रकार एसोसिएशन के ज्ञापन पर विचार करने का आश्वासन दिया है। विदित हो कि पूर्व में सूचना विभाग ने सबको समान विज्ञापन देने की व्यवस्था बना रखी थी। इसके साथ ही मान्यता प्राप्त पत्रकार एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिनेश त्रिवेदी एक विज्ञप्ति में बताया कि मान्यता प्राप्त संवाददाता समिति को फर्जी पत्रकारों की धरपकड़ में सहयोग करने की बात कही। एसोसिएशन के उक्त प्रयासों को केशव पाण्डेय, अनिल कटियार, राकेश कश्यप, निहाल सिंह जेम्स, पवन पाठक, भूपेन्द्र मणि त्रिपाठी, शशिकांत पाण्डेय, सुजान सिंह गौतम, निर्मल सिंह यादव, नफीस अहमद जाफरी, उमाकांत बाजपेई, नीरज शर्मा, सुधीर मिश्र, प्रदीप त्रिवेदी आदि विभिन्न जिलों के पत्रकारों ने सराहनीय बताया है।

आजम खान की जौहर यूनिवर्सिटी पर मायावती का बड़ा बयान, बुलडोजर एक्शन पर रोक का किया स्वागत

लखनऊ (संवाददाता)। बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती ने रामपुर में सपा नेता आजम खान के पारिवारिक ट्रस्ट द्वारा स्थापित मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय की 38 इमारतों के ध्वस्तीकरण पर अंतिम सुनवाई होने तक रोक लगाए जाने के निर्णय का मंगलवार को स्वागत किया। मायावती ने मंगलवार को एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि उप्र के जिला रामपुर में समाजवादी पार्टी नेता मोहम्मद आजम खान के पारिवारिक ट्रस्ट द्वारा स्वतंत्रता सेनानी मोहम्मद अली जौहर के नाम पर स्थापित युनिवर्सिटी की 38 इमारतों को स्वीकृत नक्शे के अभाव में ध्वस्त करने की रामपुर विकास प्राधिकरण की कार्रवाई पर अब रोक लगाने फैसला उचित और स्वागत योग्य है। उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रह चुकी मायावती ने कहा कि वैसे केवल जौहर विश्वविद्यालय ही नहीं, बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश में अगर अन्य और भी शिक्षण संस्थाएं हैं जो अपने निर्माण आदि में सरकारी नियमों आदि का सही से अनुपालन नहीं कर पाई हैं तो उन पर भी बुलडोजर की कार्रवाई के बजाय सरकार को उन्हें नियमित एवं सही कराने की नीति अपनानी चाहिए। उन्होंने कहा, कि इससे वहां शिक्षा प्राप्त करने वाले सभी छात्र छात्राओं का जीवन किसी भी प्रकार से प्रभावित ना होने पाए। उम्मीद है कि सरकार बसपा की इस जन हितैषी सलाह पर जरूर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगी। मायावती की पोस्ट से एक दिन पूर्व मुरादाबाद के मंडलायुक्त की अदालत ने जौहर विश्वविद्यालय को अंतरिम राहत देते हुए इस मामले में अंतिम सुनवाई होने तक इसके 38 भवनों के प्रस्तावित ध्वस्तीकरण पर रोक लगा दी।

लखनऊ के नए पुलिस कमिश्नर बने तरुण गाबा, एडीजी सुरक्षा से मिली नई जिम्मेदारी

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश सरकार ने मंगलवार को 15 आईपीएस अधिकारियों के तबादले किए। इस फेरबदल में 2001 बैच के आईपीएस अधिकारी तरुण गाबा को लखनऊ का नया पुलिस कमिश्नर बनाया गया है। वह अभी तक पुलिस मुख्यालय में एडीजी (सुरक्षा) के पद पर तैनात थे। वहीं, मौजूदा पुलिस कमिश्नर अमरेंद्र के. सेंगर का प्रमोशन कर उन्हें डीजी (अभिसूचना) बनाया गया है। साथ ही उन्हें डीजी (सुरक्षा) का अतिरिक्त प्रभार भी दिया गया है। साल 2020 में केंद्रीय प्रतिनियुक्ति से उत्तर प्रदेश लौटने के बाद तरुण गाबा को पहले आईजी विजिलेंस बनाया गया। इसके बाद प्रदेश में कानून-व्यवस्था को लेकर सरकार ने प्रशासनिक फेरबदल किया और उन्हें गृह सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई। इस दौरान उन्होंने गृह विभाग में कई अहम फैसलों के क्रियान्वयन में भूमिका निभाई। तरुण गाबा पहले भी लखनऊ में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा चुके हैं। जून 2024 में उन्हें प्रयागराज कुंभ मेले की तैयारियों के लिए तैनात किया गया था। महाकुंभ से जुड़े दायित्व पूरे होने के बाद उन्हें लखनऊ रेंज का आईजी बनाया गया। बाद में जनवरी 2026 में एडीजी पद पर प्रमोट होने के बाद उन्हें एडीजी सुरक्षा की जिम्मेदारी मिली। अब सरकार ने उन्हें प्रदेश की राजधानी का पुलिस कमिश्नर नियुक्त किया है। लखनऊ पुलिस कमिश्नर के रूप में कार्यरत रहे 1995 बैच के आईपीएस अधिकारी अमरेंद्र के. सेंगर का प्रमोशन डीजी रैंक में किया गया है। उन्हें पुलिस महानिदेशक (अभिसूचना) नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही पुलिस महानिदेशक (सुरक्षा) का अतिरिक्त प्रभार भी सौंपा गया है। सेंगर के कार्यकाल में राजधानी में कई बड़े आयोजन, वीवीआईपी दौरे और संवेदनशील कानून-व्यवस्था की चुनौतियों का सफलतापूर्वक प्रबंधन किया गया।

डांसरों के साथ वीडियो में दिखे पंचायत सचिव सस्पेंड,जिला प्रशासन ने एक्शन लिया

लखनऊ (संवाददाता)। लखनऊ में डांसरों के साथ वीडियो में दिखने वाले पंचायत सचिव के खिलाफ जिला प्रशासन ने एक्शन ले लिया है। माल विकासखंड में चार ग्राम पंचायतों की जिम्मेदारी संभाल रहे पंचायत सचिव सदगुरु प्रसाद को मंगलवार सुबह निलंबित कर दिया गया है। सोमवार को सामने आए वीडियो में वह जिंदगी इम्तिहान लेती है... गाने पर लेडी डांसरों के साथ झूमते दिखे थे। गांववालों ने उन पर शराब पीकर नाचने का आरोप लगाया था। डीडीओ आलोक दत्त उपाध्याय ने बताया कि पंचायत सचिव को निलंबित कर दिया गया है। इस पूरे मामले की जांच बीकेटी ब्लॉक विकास अधिकारी (बीडीओ) पूजा पांडेय को सौंप गई है। बता दें वीडियो में पंचायत सचिव हंस रहे और डांसरों के साथ बहके-बहके नजर आ रहे हैं। गांववालों का कहना है कि सचिव साहब शराब पीकर झूम रहे और डांस कर रहे थे। किसी सरकारी कर्मचारी को इस तरह इलाके में माहौल को खराब नहीं करना चाहिए। वीडियो के बारे में पंचायत सचिव सदगुरु से कॉल पर पूछा। इस पर उन्होंने कहा कि वीडियो पुराना है। लोग इसे तोड़-मरोड़ कर पेश कर रहे हैं।

संग्रहालय का स्थापना दिवस कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रयागराज। प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में स्थित चौधरी नौनिहाल सिंह कला एवं वीथिका संग्रहालय का स्थापना दिवस कार्यक्रम का आयोजन किय गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो .अजय प्रकाश खरे ने अपने उद्बोधन में अकादमिक जगत में संग्रहालय की महत्ता को उद्घाटित करते हुए भारत में इसके उन्नयन संरक्षण एवं संवर्धन पर जोर दिया।

मुख्य वक्ता प्रो. हरि नारायण दुबे प्राचीन इतिहास संस्कृति पुरातत्व विभाग इलाहाबाद रहे मुख्य वक्ता ने अपने उद्बोधन में संग्रहालय की महत्ता को उद्घाटित करते हुए सौंदर्य शास्त्र की विभिन्न परिभाषाओं के माध्यम से कला एवं स्थापत्य के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला उनकी बात को आगे बढ़ते हुए विशिष्ट वक्ता प्रो. हर्ष कुमार प्राचीन इतिहास विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने संग्रहालय के भारत में स्थापना से लेकर विभिन्न विकास एवं महत्व को बताया। अंत में अपने अध्यक्ष व्याख्यान में कायस्थ पाठशाला न्यास के अध्यक्ष चौधरी जितेंद्र नाथ सिंह ने कहा कि इतिहास को बदला नहीं जा सकता अतः अपनी धरोहरों को सहेज कर रखना चाहिए। इस अवसर पर प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की समन्वयक प्रोफेसर अर्चना खरे ने अतिथि परिचय कराया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. भावना चौहान ने किया कार्यक्रम का संचालन विभाग के शोधार्थी शिवांश तिवारी एवं शालू शुक्ला ने किया कार्यक्रम को सफल बनाने में हिंदी विभाग की संयोजक समन्वयक प्रो.सरोज सिंह प्रोफेसर आभा त्रिपाठी संस्कृत के समन्वयक विभाग प्रो. एस. पी. सिंह डॉ.दीप्ति विष्णु डॉ. भानु जी डॉ.विजय बहादुर

रसायन शास्त्र विभाग के समन्वयक प्रो. संतोष श्रीवास्तव मध्यकालीन इतिहास विभाग डॉ. अखिलेश यादव, डा. मुनींद्र शुक्ला डॉ. नीरज सिंह, दर्शन शास्त्र विभाग से डॉ. अमित सिंह समाजशास्त्र विभाग से रितेश त्रिपाठी विधि विभाग से डॉ रेनू सिंह , अनुश्री पाण्डेय तथा विभाग के समस्त शिक्षक गण डॉ. शशांक शेखर राय डॉ.कमल कृष्णा राय डॉ .आलोक कुमार सिंह डॉ. मयंक विश्वकर्मा डॉ. अपर्णा मिश्रा डॉ अनंत कुमार श्रीवास्तव डॉ. आराधना सिंह डॉ.शिवानी कुशवाहा एवं विभाग के सो साथ छात्राएं स्नातक तिथि वर्ष के छात्र-छात्राएं तथा पारस तक की छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित है।

नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

प्रयागराज। प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज में नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत दिनांक 28 अगस्त को विद्यार्थियों में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यक्रम समन्वयक एवं विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो आशुतोष कुमार सिंह व माननीय कुलपति डॉ अखिलेश कुमार सिंह जी एवं गणमान्य अधिकारियों एवं शिक्षकों की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। प्रतियोगिता में विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए नशे के सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक दुष्प्रभावों पर प्रभावशाली विचार प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों ने युवाओं से नशे से दूर रहने तथा स्वस्थ, अनुशासित एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया।

निर्णायक मंडल के सदस्य डॉ प्रिया झाँ एवं भावना कुमारी ने प्रतिभागियों के विषय-वस्तु, अभिव्यक्ति, तर्कशक्ति एवं प्रस्तुतीकरण के आधार पर मूल्यांकन किया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि नशा न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि परिवार एवं समाज के विकास में भी बाधक बनता है। युवाओं को नशामुक्त भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए तथा जन-जागरूकता के माध्यम से समाज को इस गंभीर समस्या से मुक्त करने का संकल्प लेना चाहिए।

कार्यक्रम का सफल संचालन हिन्दी विभाग की शोध छात्रा सोनल सिंह एवं सुरभि तिवारी ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन हिन्दी विभाग के शिक्षक डॉ बबलू यादव ने किया ।हिन्दी विभाग ने सभी प्रतिभागियों, निर्णायकों एवं आयोजन समिति के सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी इस प्रकार के जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने की प्रतिबद्धता प्रकट की।इस कार्यक्रम में हर्षिता एवं शुभांगी शुक्ला ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।हिन्दी विभाग के शोध छात्र किसलय सिंह एवं संस्कृत विभाग की शोध छात्रा ने संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान प्राप्त किया ।दीपांशु त्रिपाठी एवं स्वाति शुक्ला ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ अलका मिश्रा ने किया। इस अवसर पर डॉ.प्रदीप त्रिपाठी डॉ.प्रवीण त्रिवेदी .डॉ.अजीत सिंह डॉ.उत्कर्ष उपाध्याय आदि विश्वविद्यालय के शिक्षक गण उपस्थित थे।

कमजोर पड़ रहा है पीडीए समीकरण-ओमप्रकाश

बोले,अखिलेश को अपने ही देंगे टेंशन

लखनऊ (संवाददाता)। पंचायती राज मंत्री व सुभासपा प्रमुख ओम प्रकाश राजभर ने दावा किया कि पार्टी का पीडीए यानि पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक समीकरण कमजोर पड़ रहा है। मंत्रीओम प्रकाश राजभर ने कहा कि सपा अब अपने पारंपरिक मुस्लिम वोट बैंक को बचाने की चुनौती से जूझ रही है और गांव-गांव में उसकी छवि कानून-व्यवस्था व माफिया संरक्षण की राजनीति से जुड़ी पार्टी की बन चुकी है। राजभर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अखिलेश यादव को टैग करते हुए लिखा कि आपको लड़ना एनडीए से हैलेकिन आपको इस बार आपके अपनों से लड़ना पड़ेगा। आपको यकीन नहीं होगा. मगर ये सच है।उन्होंने कहा कि हम हमेशा ग्राउंड पर लोगों के बीच रहते हैं। ग्राउंड की ही रिपोर्ट आपको बता रहे हैं।जानते हैं मित्र, पीडीए आपके हाथ से सरक चुका है।अब तो हालत एमवाई का गठजोड़ बचाने की आ गई है। आपके बिग बॉस यानि राहुल जी का पंजा आपके एम पर झपट्टा मारना शुरू कर दिया है।

वो तो आपके अपने हैं न, दूसरे आपके अपने बनना चाहते हैं। समझ ही गए होंगे कि मैं ओवैसी की बात कर रहा हूं। गांव-गांव में आप लोगों की प्रसिद्धि गुंडे और माफिया वाली पार्टी की है, जो कि 100 फीसदी सही है।आप जब सरकार में होते हैं तो जंगलराज का पूरा पैकेज लेकर आते हैं। गैर-यादव पिछड़ा और बहुजनों पर खुलेआम अत्याचार करते हैं। बेटियों

को आपके गुंडे सरेआम छेड़ते हैं। थाने और तहसील सपा के दफ्तर बना दिए जाते हैं।हर विभाग और हर जिले में एक-एक माफिया पालते-पोसते हैं। अपराध का सैफई सिंडिकेट चलाते हैं। परेशान होकर अब मुसलमान भी आपसे छटकने लगा है।

बीजेपी के गुप्त सर्वे ने उड़ाई विधायकों की नींद !

कई के टिकट कटने के आसार, बीजेपी उतारेगी जिताऊ कैंडिडेट

लखनऊ (संवाददाता)। अगले साल 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक पारा चढ़ने लगा है। सत्तारूढ़ बीजेपी ने हैट्रिक लगाने खातिर मास्टर प्लान बनाया है,जो कई मौजूदा विधायकों की नींद उड़ा सकती है।बीजेपी कोई रिस्क न लेने के लिये जानी जाती है। उसे कैंडिडेट वो चाहिए जो जीतकर विधानसभा पहुंचने की कूबत रखता हो। इसीलिए यूपी की सभी 403 विधानसभा सीटों पर विधायकों के कामकाज, जनता के बीच उनकी छवि, लोकप्रियता का गुप्त सर्वे कराने जा रही है। पार्टी का साफ संदेश है कि सिफारिश और गुटबाजी के दिन लद गये हैं। विधायकों का रिपोर्ट कार्ड तय करेगा कि किसे दोबारा मैदान में उतारा जाएगा और किसका पत्ता कटेगा। पार्टी किसी एक एजेंसी या नेता की रिपोर्ट पर आंख मूंदकर भरोसा नहीं करने वाली है। प्रक्रिया गोपनीय रखी गई है। इसे तीन अलग-अलग स्तरों पर अंजाम दिया जा रहा है। सर्वेयर सीधे आम जनता से रूबरू होंगे।

नदियाँ पैर पसार

(कुण्डलिया)

जंगल वन उपवन घटे, घटा गाँव विस्तार।
गीत गा रहीं बाढ़ का, नदियाँ पैर पसार।
नदियाँ पैर पसार, साथ ले जातीं बस्ती।
गायब है मुस्कान, मौन है सारी बस्ती।
सुन लो कहें प्रदीप,प्रकृति से मतकर दंगल।
गाँवों को कह श्रेष्ठ, बचाओ उपवन जंगल।।

मानव-दोहन से हुईं, नदियाँ जब लाचार।
बादल से कहने लगीं, करो तनिक उपचार।
करो तनिक उपचार,गरज कर झमझम बरसो।
रखना इतना याद,नहीं आपस में बहसो।
सुन लो कहें प्रदीप, देख बारिश का तांडव।
लुप्त हुए तटबन्ध, परेशा हैं सब मानव।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

कानूनी शिकंजे से बचने के लिए आरोपी ने पत्नी और सास को बनाया टूलकिट

लखनऊ (संवाददाता)। शहर के प्रमुख कारोबारी रहे दिवंगत चन्द्रभूषण त्रिपाठी की बेटी से निकाह करने वाले मोनिश हसन ने अपनी पत्नी शिल्पी त्रिपाठी और उसकी मां गीता त्रिपाठी को टूलकिट बनाकर सम्पत्तियों और कारोबार को हड़पने के कार्य को अंजाम दिया, ताकि वह अपने आपको कानूनी शिकंजे से बचा सके। मोनीश के इस टूलकिट के कारण बरबादी के कगार पर पहुंचे त्रिपाठी परिवार में बची दो विधवा महिलायें न्याय के लिये दर-दर की ठोकरें खा रही है और पुलिस प्रशासन इस मामले को पारिवारिक सम्पत्ति विवाद बताकर आरोपी मोनिश के खिलाफ कार्यवाही करने से बच रही है। इस पूरे मामले में महत्वपूर्ण चौंकाने वाली सबसे बड़ी बात यह सामने आयी है कि त्रिपाठी परिवार के सबसे छोटे पुत्र मनीष त्रिपाठी की 4 दिसम्बर 2025 को निधन होने के मात्र 19 दिनों बाद ही उसकी पत्नी पीड़िता निहारिका त्रिपाठी के ऊपर ऐसा कौन सा दबाव था, जिसको 23 अगस्त को नरही और राणा प्रताप मार्ग स्थित फ्लैट जहां पारिवारिक विज्ञापन कारोबार चलता है, की गिफ्टडीड सास गीता त्रिपाठी के पक्ष में करनी पड़ी, और उसके कुछ ही दिन हि दिन बाद सम्पत्तियों की गिफ्ट डीड गीता त्रिपाठी ने अपनी पुत्री यानी शिल्पी त्रिपाठी उर्फ अरशी हसन के नाम कर दी। सम्पत्ति की यह लिखा-पढ़ी आनन-फानन में कराने और पारिवारिक कारोबार चाणक्य एजेन्सी को भी वहां के कर्मचारी समीर पाठक से मिलीभगत कर अपने कब्जे में लेना, पूरी तरह से यह सिद्ध करता है कि मोनिश हसन अपने आपको कानूनी शिकंजे से बचाते हुये अपनी पत्नी और सास को डरा धमकाकर टूलकिट की तरह इस्तेमाल कर रहा है। इसके अलावा चाणक्य एजेन्सी को संभाल रहे समीर को लेकर वर्षों पुराना एक मामला भी चर्चा में आ रहा है कि वह दूसरों से लिये कर्जों से बचने के लिये अपनी मौत की खबर छपवाकर अंडरग्राउण्ड हो गये थे। इस मामले में पीड़ित विधवा महिलाओं ने कई गंभीर आरोप लगाये है, जिसकी जांच गंभीरता के साथ जरूरी है। वहीं त्रिपाठी परिवार को न्याय दिलाने और आरोपियों के खिलाफ कार्यवाही की मांग को लेकर अखण्ड आर्यावर्त आर्य त्रिदंडी महासभा सहित कई हिन्दूवादी संगठन आगामी चार अगस्त को प्रदर्शन करने की तैयारी कर रहे है।

राजधानी पहुंचे प्रदेशभर से सैकड़ों कोटेदार, अगस्त में राशन न बांटने की चेतावनी

लखनऊ (संवाददाता)। लंबित मांगों को लेकर प्रदेशभर से सैकड़ों कोटेदार मंगलवार को राजधानी लखनऊ पहुंच गए। वे चारबाग से निकलकर विधानसभा घेराव करने जाने लगे। पुलिस ने उन्हें चारबाग पर ही रोक लिया। कोटेदार चारबाग से विधानसभा तक पैदल मार्च निकालने की तैयारी में थे, लेकिन भारी पुलिस बल की मौजूदगी के बीच उन्हें आगे बढ़ने नहीं दिया गया। इसके बाद सभी प्रदर्शनकारियों को बसों में बैठाकर इको गार्डन भेज दिया गया। ऑल इंडिया फेयर प्राइस शॉप डीलर्स फेडरेशन से जुड़े कोटेदार मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपने पहुंचे हैं। संगठन ने साफ किया है कि यदि सरकार ने उनकी मांगों पर जल्द निर्णय नहीं लिया तो अगस्त में पूरे प्रदेश में राशन वितरण नहीं किया जाएगा। इस आंदोलन की घोषणा पहले ही विभिन्न जिलों में बैठकों के माध्यम से की जा चुकी है। कोटेदारों ने सरकार के सामने कई मांगें रखी हैं।

उत्तर मध्य रेलवे

ई-नीलामी सूचना

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज द्वारा निम्नलिखित ई-नीलामी बोलियां आमंत्रित की गयी हैं।

प्रयागराज मण्डल द्वारा आमंत्रित ई-नीलामी

क्रम	वाणिज्य विज्ञापन का विवरण	ई-आक्शन कैटलाग संख्या	ई-आक्शन प्रारंभ तिथि एवं समय
1	सूबेदारगंज स्टेशन पर आउट ऑफ होम (Out of Home - OOH) विज्ञापन के अंतर्गत होर्डिंग/यूनिपोल (192 वर्ग फुट) तथा स्टैंड-अलोन विज्ञापन संरचना (300 वर्ग फुट) के माध्यम से वाणिज्यिक प्रचार/विज्ञापन अधिकारों के लिए ई-नीलामी। संलग्न स्थानों के अनुसार वाणिज्यिक प्रचार/विज्ञापन हेतु उपलब्ध कुल क्षेत्रफल 492 वर्ग फुट है।	NFR-Advt-OH-SFG	30.07.2026 at 12:00 hrs
2	प्रयागराज मंडल के अंतर्गत सूबेदारगंज रेलवे स्टेशन के सुलेमसराय (Sulemsarai) साइट पर खाद्य वैन (यात्रियों को 24x7 सेवाएँ प्रदान करने हेतु) के सृजन, संचालन एवं अनुरक्षण के लिए पाँच वर्ष की अवधि हेतु ई-नीलामी।	NFR-MSS-FV-SFG	30.07.2026 at 12:00 hrs
3	इटावा एवं फतेहपुर रेलवे स्टेशनों पर मोबाइल एवं एक्सेसरीज कियोस्क तथा अन्य उपयोगी वस्तुओं के विक्रय हेतु प्रत्येक स्टेशन पर 01 कियोस्क की स्थापना, संचालन एवं प्रबंधन के लिए 05 वर्ष की अवधि हेतु ई-नीलामी।	PRYJ-NFR-MSS-26	07.08.2026 at 10:30
4	प्रयागराज मंडल के अंतर्गत फिरोजाबाद रेलवे स्टेशन पर 25 फीट x 30 फीट क्षेत्रफल में खाद्य वैन (यात्रियों/ग्राहकों को 24x7 सेवाएँ प्रदान करने हेतु) के सृजन, संचालन एवं अनुरक्षण के लिए पाँच वर्ष की अवधि हेतु ई-नीलामी।	PRYJ-NFR-MSS-26	07.08.2026 at 10:30
5	संलग्न संयुक्त रूप से चिन्हित साइट योजना एवं चिन्हित क्षेत्र के अनुसार मानिकपुर रेलवे स्टेशन पर रेलवे भूमि पर विद्युत वाहन (ईवी) चार्जिंग स्टेशन की स्थापना, संचालन एवं अनुरक्षण के लिए पाँच (05) वर्ष की अवधि हेतु ई-नीलामी।	PRYJ-NFR-MSS-26	07.08.2026 at 10:30
6	अलीगढ़ रेलवे स्टेशन पर पाँच (5) वर्षों की अवधि के लिए इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन की स्थापना, संचालन और रखरखाव हेतु ई-नीलामी; संलग्न संयुक्त रूप से चिन्हित साइट प्लान और चिन्हित क्षेत्र के अनुसार।	PRYJ-NFR-MSS-26	07.08.2026 at 10:30
7	प्रयागराज रेलवे स्टेशन के सिविल लाइन्स साइड स्थित पब्लिक प्लाजा एवं कमर्शियल आर्केड में अभिगम नियंत्रण (एक्सेस कंट्रोल) युक्त भूमिगत पार्किंग सहित बहु-कार्यात्मक वाणिज्यिक गतिविधियों की स्थापना, संचालन एवं अनुरक्षण के लिए 15 वर्ष की अवधि हेतु ई-नीलामी।	PRYJ-NFR-MSS-26	07.08.2026 at 10:30

नोट : इच्छुक बोलीदाता अधिक जानकारी के लिए ई-नीलामी में भाग लेने के लिए आधिकारिक वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जा सकते हैं।

1716/26 (A5)

North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | @CPRONCR

सम्पादकीय.....

पत्रकारिता के लिए नया सबक

पिछले सवा महीनों से नयी पीढ़ी के जोश से गुलजार जंतर–मंतर अब शांत है। लेकिन पेपर लीक के खिलाफ जिस आंदोलन की शुरुआत हुई, उससे अब देश की सियासत से लेकर समाज तक बड़ी हलचल खड़ी हो चुकी है। दिल्ली, मुंबई, पटना, प्रयागराज, पुणे तमाम शहरों से बेहद सुंदर तस्वीरें सामने आईं, जिन्होंने साबित किया कि देश में लोकतंत्र अभी मरा नहीं है। लोकतंत्र की जो नयी धड़कनें आंदोलन में सुनाई दीं, उन से अब सत्ता और सत्तापोषित मीडिया दोनों के लिए चेतावनी है कि वे संभल जाएं और ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी निभाएं। दो दिन फ्रेंड्स कहकर इंस्टाग्राम पर संदेश देने वाले प्रधानमंत्री ने जब रविवार देर रात तक कोई संदेश नहीं दिया, तो समझ आ गया कि वे पूरे खोखलेपन के साथ नयी पीढ़ी को संबोधित कर रहे थे। प्रधानमंत्री मोदी जब इंटरनेट, मेट्रो सेवाएं, स्विगी–जोमैटो, ओला–उबर–रैपिडो सब कुछ बंद करने के बाद भी आंदोलन में शामिल होने के लिए लोगों को जंतर–मंतर तक पहुंचने से नहीं रोक सके। जब धर्म, जाति, भाषा, लिंग सारे भेदभावों को हवा में उड़ाकर दिन–रात लोग एकजुटता के साथ सरकार के विरोध में डटे रहे। जब लाठी चार्ज, बैरिकेडिंग, पानी की बौछार, विश्वविद्यालयों के आंदोलन में शामिल न होने के फरमान, झूठे मुकदमों, पासपोर्ट रद्द करने की धमकी जैसे दमनकारी उपाय भी लोगों की हिम्मत को नहीं तोड़ पाए, तो मोदी को लगा कि इस नयी पीढ़ी से इसी की शैली में संवाद किया जाए, तो ये लोग समझ जाएंगे। मगर यहां भी मोदी को डबल झटका लगा। नयी पीढ़ी ने उनकी फ्रेंड रिक्वेस्ट को पूरी तरह हवा में उड़ा दिया। ऊपर से उनके कैमरा एंगल को लेकर सोशल मीडिया पर खूब फजीहत भी हुई। इसलिए मोदी शायद तीसरे दिन फ्रेंड्स बोलने से और कोई संदेश देने से बचे। हालांकि धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा लेकर उन्होंने जंतर–मंतर से आंदोलन तो खत्म करवा दिया है, बस इसी से उन्हें थोड़ी राहत मिल सकती है। लेकिन इसके बावजूद अब मोदी चौन से बैठ पाएंगे, इसकी गारंटी नहीं है। पिछले बारह सालों की उनकी राजनीतिक चतुराई और सत्ता पर बने रहने की कला को इस बार सबसे बड़ी चुनौती मिली है, वो भी सीधे नयी पीढ़ी की तरफ से। जो न गोदी मीडिया के एजेंडे पर कान धरती है, न सरकारी दबाव की उसे परवाह है। दरअसल भाजपा के विभाजनकारी एजेंडे को मीडिया के बड़े हिस्से ने लगातार खाद–पानी दिया। इससे तथाकथित पत्रकारों की और उनके मालिकान की दुकानदारी खूब फली–फूली और सत्ता के जरिए लोकतंत्र और संविधान को कुचलने के काम में भाजपा को आसानी हुई। पिछले बारह सालों में अनगिनत बार इस बात पर चिंता जताई जाती रही कि जो खुद को मुख्यधारा का मीडिया कहता है, वहां मुख्य मुद्दे यानी जनता के हित से जुड़े मुद्दे बिल्कुल गायब हैं। बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य की बदहाली इन सब पर कोई चर्चा नहीं होती और हर बात में हिंदू–मुसलमान एंगल खड़ा कर दिया जाता है। खुद विपक्षी दल सरेआम कई पत्रकारों को कह चुके कि आप मोदी के मित्र उद्योगपतियों और भाजपा के लिए काम करते हैं। निष्पक्ष खबरें नहीं दिखाते और हमारी खबरों को गायब करते हैं। राहुल गांधी, अखिलेश यादव जैसे नेताओं के तो कई बयान सोशल मीडिया पर हैं, जिनमें वे मीडिया पर तंज कसते हैं। लेकिन इसके बावजूद विपक्षी दलों ने ऐसे मीडिया का पूरी तरह से बहिष्कार नहीं किया, जिसने पेशेवर बेईमानी की। बल्कि विपक्षी नेताओं के घरों और दफ्तरों में ऐसे लोगों का खूब सत्कार हुआ, जिन्होंने झूठ और चापलूसी को पत्रकारिता का नाम दिया। नयी पीढ़ी यानी जेन जी यहां भी समझदारी दिखा गई।जंतर–मंतर पर बाकायदा एक दीवार पर कुछ ऐसे पत्रकारों की तस्वीरें लगा कर उन पर क्रॉस बना दिया, जिन्होंने मोदी सरकार की चाटुकारिता में कोई कमी नहीं छोड़ी और देश में नफरत फैलाने में अपना भरपूर सहयोग किया। खुद को सेलिब्रिटी मानने वाले इन पत्रकारों को यह सब देखकर शर्म आई या नहीं, कहा नहीं जा सकता। क्योंकि जब आंदोलनकारियों को पीटा जा रहा था, जब निर्दोषों का दमन हो रहा था, तब भी ये लोग किसी भी तरह सरकार का बचाव करने में लगे थे। किसी ने नैरेटिव चलाया कि आंदोलन की विदेशी फंडिंग हो रही है, किसी ने साबित करने की कोशिश की कि आंदोलनकारियों ने ही पुलिस को पीटा, वो असामाजिक तत्व हैं। यही सब किसान आंदोलन और शाहीन बाग आंदोलन में भी हुआ था। उन्हें खालिस्तानी, पाकिस्तान और चीन से प्रायोजित, सोरोस का एजेंडा न जाने क्या कुछ कहा गया। नयी पीढ़ी यह सब देख रही थी, इसलिए जब उस पर ऐसे ही आरोप लगे तो उसने अपने तरीके से जवाब दिया। दिल्ली से लेकर देश के बाकी हिस्सों तक आंदोलन की खबरों को लेकर यू ट्यूब और अन्य सोशल मीडिया मंचों से होने वाली स्वतंत्र पत्रकारिता पर ही भरोसा किया गया। गोदी मीडिया का तो अघोषित प्रवेश निषेध ही कर दिया गया। कई अमीर चौनलों के रईस पत्रकारों ने बिना माइक आईडी के खबरों को कवर किया, क्योंकि उन्हें अपने बेइज्जती का डर था। हालांकि इन्हीं अमीर चौनलों के मध्यमवर्गीय रिपोर्टरों को काफी कष्ट झेलना पड़ा। महाराष्ट्र में ही जी न्यूज के कपिल राउत नाम के रिपोर्टर का एक वीडियो खूब वायरल हुआ। जिसमें आंदोलनकारी उन्हें लूजर–लूजर कहकर चिढ़ाने लगे और वे चुपचाप यह जिल्लत सहते रहे।

मोदी जी की बड़ी हार लेकिन नरेटिव की लड़ाई में कांग्रेस को मेहनत करना होगी

शकील अख्तर

अब खेल नरेटिव का है। प्रधानमंत्री मोदी की पुरानी फेक इमेज अब नहीं बन सकती। बीजेपी आरएसएस को उसमें रूचि भी नहीं है। लेकिन हां, राहुल की छवि खराब करने का काम और तेज होगा। भाजपा संघ की राजनीति ही यही है। दूसरे की लकीर छोटी करना। और यहीं कांग्रेस को बहुत होशियारी से काम करने की जरूरत है। मोदी की 12 साल में यह सबसे बड़ी हार है। उनके भक्त, गोदी मीडिया खुद पार्टी के लोग और आरएसएस सब सोचते थे कि मोदी कोई जादू मारेंगे और जंतर मंतर खाली हो जाएगा। मास्टर स्ट्रोक। मोदी का चौंकाने वाला फैसला। इसी तरह यह लोग मोदी की फेक इमेज बनाते थे। गुजरात के झूठे विकास माडल से लेकर, छप्पन इंच की छाती और मोदी नहीं तो कौन जैसी झूठी धारणाएं बनाकर वे मोदीजी की महिमा मंडन करते थे। लेकिन जानते थे यह सच नहीं है। इसलिए दूसरी तरफ राहुल की छवि खराब करने का काम भी मोदी की छवि बनाने जैसी मेहनत से करते थे। खुद राहुल ने कहा कि– मेरी छवि खराब करने के लिए हजारों–करोड़ रुपया खर्च किया। लेकिन सच्चाई हमेशा के लिए छुपाई नहीं जा सकती। अब धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे के साथ मोदी की सारी इमेजें एक साथ टूट गईं। हमारी सरकार में इस्तीफे नहीं होते एक बड़ा दावा था। और यह भी यूपीए सरकार को कमजोर दिखाने के लिए कि वहां मंत्री हटा दिए जाते थे। यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी और मनमोहन सिंह अच्छा करते थे कि किसी पर आरोप होने के बाद उसका मंत्री पद छीन लेते थे। लेकिन यहां तो दबंगी में कहा जाता था कि यह यूपीए सरकार नहीं है भैया! यह एनडीए है यहां इस्तीफे नहीं होते। फिर क्या हुआ? जोन–जेड ने बता दिया कि सत्य और अहिंसा की ताकत क्या होती है। इस नई पीढ़ी के लिए बहुत सारी बातें कही जा रही हैं। समय के अनुसार इसकी वैल्यूजा नई हैं। लेकिन कुछ यूनिवर्सल ट्रूथ होते हैं। गांधी जी का सत्य, अहिंसा उनमें सबसे ऊपर है। भारत से दुनिया में जाकर सार्वभौमिक सिद्धांत बना। जेन–जेड भी इस पर कायम रहा। गांधीजी की प्रासंगिकता जिसे यही लोग चौलेंज करते रहते थे फिर प्रतिपादित हुई। भारत के तीनों बड़े नायक जंतर मंतर पर लगातार छाए रहे। गांधी, भगत सिंह और डा. आम्बेडकर। भाजपा संघ का कोई नायक वहां नहीं था। उल्टा मोदी को इन करीब 36–37 दिनों में वहां सबसे ज्यादा आलोचना का शिकार होना पड़ा। उनके सारे आवरण वहां उतर गए। कहां अपनी ही पार्टी में सबसे बड़ा कद होने की धारणा बनाने के लिए वाजपेयी, आडवानी और मुरली मनोहर जोशी का नाम लेना भी गुनाह बना दिया गया था। और बाहर तो सीधा नेहरू से मुकाबला किया जाता था। मगर 12 साल की सारी मेहनत सवा महीने में धुल गई। सच के सामने। छात्रों का आन्दोलन सच के मुद्दे पर था। बहुत लंबे समय तक शिक्षा जिसमें पेपर लीक सीबीएसई की बारहवीं की परीक्षाएं ठीक से न करा पाने, बेरोजगारी जैसे छात्र और युवाओं के भविष्य से जुड़े जरूरी मुद्दे थे दबे रहे। मगर जैसा कि कहते हैं कि हर चीज का समय आता है तो वह आया। ब्लेम सारा सुप्रीम कोर्ट की चीफ जस्टिस सूर्यकांत पर आया। फंस गए। उन्होंने तो जैसा सब बोल रहे थे बिना किसी जवाबदेही के ऐसे ही बोल दिया था। बेरोजगार युवाओं को काकरोच। और युवा एवं छात्रों को बात लग गई। काकरोच जनता पार्टी बन गई। और दिल्ली के जंतर मंतर से जो आन्दोलन शुरू हुआ वह ऐसा फैला कि देश भर से होता हुआ विदेशों तक फैल गया। पहले तो किसान, मजदूर या नोटबंदी जीएसटी के समय छोटे व्यापारियों के विरोध पर जैसी गालियां उन्हें दिलवाईं गईं थी वैसी ही छात्रों को दिलवाई गईं। मगर यह जेन–जेड था। 25 साल से कम उम्र। सुबह के हवा के झोंके की तरह ताजगी से भरा हुआ। उस पर इन पुराने हरबों का कोई असर नहीं होता है। उसकी भाषा नई, विचार नए और साहस से भरपूर। मोदी जी ने सोचा उनके प्लेटफार्म से जाकर बात करूं। दो दिन इंस्टाग्राम पर गए। मगर उल्टा मजाक बन गया। जेन–जेड में तमाशे नहीं चलते। दिल के सच्चे हैं तो सच को फौरन पहचान लेते हैं। मोदी की हिम्पोक्रेसी मित्रों नफरत और विभाजन के नशे में डूबो दिए गए लोगों तक तो चल गई मगर डियर फ्रेन्ड्स छात्रों और युवाओं पर नहीं चला। यहां तो हिन्दू–मुसलमान, जात–पात, स्त्री– पुरुष कोई भेद था ही नहीं। पूरे देश ने देखा कि लड़कियां यहां सबसे सहज और निर्भय दिखीं। तो यह नई पीढ़ी की नई दुनिया थी। मोदी जी के पुराने बांटो, डराओ के तरीकों का इन पर कोई असर नहीं हुआ। मोदी जी इस पीढ़ी को समझ ही नहीं पाए। लेकिन यह छात्र और नौजवान मोदीजी को अच्छी तरह समझ गए। उनका मजाक उड़ाने के अलावा उनके बारे में कुछ और सोचा ही नहीं। दूसरी ओर राहुल की तरफ अपने आप खींचे चले गए। जंतर मंतर पर सबसे लंबी 23 दिन की भूख हड़ताल करने वाली जेएनयू की छात्रा नेहा बोरा अपने साथियों के साथ राहुल गांधी के यहां 10 जनपथ पहुंच गईं। नेहा जंतर मंतर की सबसे बड़ी स्टार बन कर उभरी हैं। और कारण स्पष्ट है। वे विचारों के साथ आंदोलन कर रही थीं। शिक्षा व्यवस्था कैसी होनी चाहिए। 12 साल पहले तक कैसे स्टूडेंट फ्रेंडली थी और अब कैसे उसे निजी और आरएसएस के हाथ में सौंप दिया गया है? इस पर उनका गहन अध्ययन था। और उन्होंने 10 जनपथ पर राहुल के साथ प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि शिक्षा के बारे में हमारी सबसे अच्छी बातचीत राहुल जी के साथ हुई। मतलब राहुल की जो शिक्षा की समझ है वह आज की युवा पीढ़ी की तरह है। उससे मेल खाती है। राहुल इस पूरे आंदोलन में छात्रों के साथ खड़े रहे। जबकि पेपर लीक और सीबीएसई की परीक्षा में गड़बड़ी के खिलाफ उनका आंदोलन पहले से चल रहा था। छात्रों की गूंज के नाम से वे 17 जून को कोटा में बड़ा छात्र सम्मेलन कर चुके थे। उसके बाद देहरादून में भी। मगर 20 जुलाई को छात्रों के ऊपर बेरहम लाठी चार्ज, आंसू गैस और पैलेट गन के इस्तेमाल के बाद राहुल ने छात्रों के समर्थन में प्रधानमंत्री निवास जाकर धरना दे दिया। संसद में तो रोज आवाज गूंज ही रही थी। 30 जनवरी मार्ग गांधी स्मृति भी गए। बापू की जहां हत्या हुई थी। छात्रों को संबल देने की उस जगह जाकर प्रार्थना की। यहां भी पुलिस ने रोका। प्रधानमंत्री निवास के बाहर से तो नेता प्रतिपक्ष को घसीटा ही गया था। उनकी नाक से खून आया था। मगर उसके अगले दिन ही प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि मुझ पर और चोट मार लें मगर सवाल छात्रों का है कि उन्हें क्यों मारा? रविवार को उन्होंने सीधे गृह मंत्री अमित शाह से पूछा छात्रों को मारने का आदेश किसने दिया? काकरोच जनता पार्टी ने अपना आन्दोलन खत्म कर दिया मगर राहुल की लड़ाई लंबी है। जो लोग कहते थे कि राहुल जंतर मंतर पर क्यों नहीं जाते उसका जवाब यही है। राहुल अमित शाह और मोदी से सवाल कर रहे हैं। धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे के बाद शनिवार को उन्होंने कहा कि वह तो होना ही था। मगर सवाल पूरी शिक्षा व्यवस्था का है। उसमें घुसकर आरएसएस ने उसे दीमक की तरह खोखला कर दिया है। देश की बिगड़ती आर्थिक स्थिति का भी सवाल है। अमेरिका के सामने सरेंडर करने का भी। छात्रों के दायरे से फिलहाल यह चीजें बाहर की थीं। इसलिए राहुल ने बिना वहां जाए छात्रों का पूरा समर्थन और सहयोग किया। कांग्रेस के लोग तो वहां रोज पहुंचते थे खाना–पीना दवाइयां लेकर।राहुल गांधी कहते हैं देश को अगर बचाना है तो मोदी को हटाना है। उनकी इस लड़ाई में छात्र युवा बड़ी संख्या में पहले से शामिल हैं। और जो बाकी थे वे भी अब समझ गए हैं कि धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा ठीक है। मगर अब देश को बचाने का सवाल है और उसके लिए भविष्य को सामने आना पड़ेगा। और अतीत को जाना पड़ेगा। राहुल ने खुद ही इसे डि कोड भी किया है। भविष्य मतलब युवा और अतीत मतलब मोदी और आरएसएस। साथ ही यह भी कह दिया कि अतीत कभी भविष्य से जीत नहीं सकता।

सोनम वांगचुक का अनशन और शिक्षा सुधार का एजेंडा

अरुण कुमार डनायक

जलवायु कार्यकर्ता और शिक्षाविद् सोनम वांगचुक ने 24 जून को गुरुग्राम में केंद्र सरकार के दो मंत्रियों जे.पी. नड्डा और डॉ. जितेंद्र सिंह से लिखित आश्वासन मिलने के बाद 26 दिन लंबा अनशन समाप्त किया। इसके बाद घटनाक्रम तेजी से बदला और लंबे समय से जारी छात्र आंदोलन ने निर्णायक मोड़ लिया। सरकार ने वादा किया कि जंतर–मंतर और संसद मार्च में शामिल छात्रों पर कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं होगा तथा नीट प्रश्नपत्र लीक के बाद आत्महत्या करने वाले छात्रों के परिवारों को मुआवजा देने पर विचार किया जाएगा। साथ ही संसद में शिक्षा व्यवस्था पर चर्चा और जवाबदेही सुनिश्चित करने के कदम उठाने की घोषणा की गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दो इंस्टाग्राम वीडियो संदेशों में फास्ट–ट्रैक अदालतों और कठोर दंड वाले विधेयक का प्रारूप तैयार होने की बात कही, हालांकि शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग पर तत्काल कोई टिप्पणी नहीं की। लेकिन लगातार बैठकों और बढ़ते युवा प्रतिरोध के दबाव में अंततरू 25 जुलाई को शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने इस्तीफा दे दिया। महात्मा गांधी के दृष्टिकोण में उपवास केवल राजनीतिक दबाव का साधन नहीं था, बल्कि आत्मशुद्धि, नैतिक जागरण और संवाद की प्रेरणा भी था। उन्होंने अपने आंदोलनों में कभी संवाद और समझौते के द्वार बंद नहीं किएय सप्रू और जयकर जैसे मध्यस्थों ने कई अवसरों पर समाधान का मार्ग प्रशस्त किया। इसी परंपरा में सोनम वांगचुक के अनशन और छात्र आंदोलन की समाप्ति को किसी पक्ष की हार–जीत नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक सहमति और जवाबदेही की दिशा में एक सकारात्मक कदम माना जाना चाहिए। जंतर–मंतर से शुरू हुआ छात्र आंदोलन तेजी से कई राज्यों में फैल गया और उनकी मांगें नीट प्रश्नपत्र लीक से आगे बढ़कर पूरी शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही तक पहुंच गई। छात्रों का कहना है कि केवल नए कानून पर्याप्त नहीं होंगेय संस्थागत कमजोरियों और प्रशासनिक जिम्मेदारी पर गंभीर ध्यान देना होगा। बार–बार होने वाले प्रश्नपत्र लीक ने उनकी मेहनत और भविष्य को असुरक्षित बना दिया है, जबकि ग्रामीण पृष्ठभूमि से आए छात्र सरकारी और निजी विद्यालयों के बीच बढ़ती असमानता पर चिंतित हैं। पुलिस बल प्रयोग से घायल होने के बावजूद छात्रों ने आंदोलन जारी रखा, क्योंकि उनका उद्देश्य केवल एक परीक्षा का न्याय नहीं बल्कि पूरी शिक्षा व्यवस्था में सुधार है। छात्रों ने सीबीएसई मूल्यांकन प्रणाली, सीयूईटी में देरी, परीक्षा केंद्रों की अव्यवस्था, शिकायत निवारण तंत्र की कमजोरियों को भी गंभीर समस्याएं बताया। लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक जवाबदेही का एक महत्वपूर्ण माध्यम चुनाव, संसदीय उत्तरदायित्व और आवश्यकता पड़ने पर मंत्रीस्तरीय दायित्व तय करना भी है। सरकार ने अंततरू शिक्षा मंत्री का इस्तीफा स्वीकार कर एक कदम उठाया, हालांकि इसमें व्यक्तिगत जिम्मेदारी का स्पष्ट स्वीकार नहीं दिखता। उच्च शिक्षा विभाग में सचिव स्तर पर फेरबदल और एनटीए के संविदा कर्मियों को हटाना छात्र संगठनों के अनुसार उनकी मूल मांगों का समाधान नहीं है। विपक्ष ने प्रधानमंत्री के संदेश को अपर्याप्त बताते हुए शिक्षा मंत्री के इस्तीफे और दोषियों पर कठोर कार्रवाई की मांग की थी। उन्होंने संसद के भीतर और बाहर शिक्षा व्यवस्था पर व्यापक चर्चा का दबाव बनाया। इस घटनाक्रम से स्पष्ट है कि विपक्ष की सरकार को चौतरफा घेरने की रणनीति सफल रही। अब जब छात्र अपने घर लौट चुके हैं, संसद के सुचारू रूप से चलने और शिक्षा सुधार जैसे दीर्घकालिक विषयों पर राजनीतिक दलों के बीच व्यापक सहमति बनने की संभावना है।फिल्म जगत, साहित्यकारों, शिक्षाविदों, वकीलों, मानवाधिकार संगठनों और नागरिक समाज के व्यापक समर्थन ने इस आंदोलन को छात्रों के दायरे से निकालकर शिक्षा सुधार और लोकतांत्रिक जवाबदेही का व्यापक सामाजिक अभियान बना दिया। भारत की शिक्षा व्यवस्था में सुधार केवल सरकार पर निर्भर नहीं हो सकताय इसके लिए नवाचार, जवाबदेही और उद्यमशीलता को जोड़ना होगा। देश की सबसे बड़ी पूंजी उसकी युवा जनसंख्या है, जो तभी लाभकारी बनेगी जब उसे गुणवत्तापूर्ण और रोजगारोन्मुख शिक्षा मिले। शिक्षा की गुणवत्ता विद्यालय के सरकारी या निजी होने से नहीं, बल्कि योग्य शिक्षकों, प्रभावी प्रबंधन और जवाबदेही से तय होती है। भवन, स्मार्ट क्लास या डिजिटल उपकरण पर्याप्त नहीं हैंय असली सुधार अच्छे शिक्षण, नियमित मूल्यांकन और शिक्षकों की जिम्मेदारी से आता है। विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों तक संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में सुधार आवश्यक है, ताकि यह अधिक पारदर्शी और विश्वसनीय बने। अत्यधिक नियम–कानून नए शिक्षा उद्यमियों के प्रवेश में बाधा डालते हैंय इन्हें सरल और पारदर्शी बनाया जाना चाहिए। आज की अर्थव्यवस्था में शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री नहीं, बल्कि कौशल और रोजगार योग्य प्रतिभा का विकास है। परीक्षा प्रणाली में सुधार हेतु कंप्यूटर आधारित परीक्षाओं का विस्तार, प्रश्नपत्रों की डिजिटल सुरक्षा, बायोमेट्रिक सत्यापन और एआई निगरानी अपनाई जानी चाहिए। मूल्यांकन में स्वचालित ग्रेडिंग से परिणाम शीघ्र और निष्पक्ष होंगे। साथ ही, परीक्षा नियामक संस्थाओं को स्वतंत्र और जवाबदेह बनाया जाए। एनटीए की संस्थागत क्षमता, तकनीकी दक्षता और स्वतंत्रता को सुदृढ़ करना भी आवश्यक है, ताकि उच्च स्तरीय परीक्षाओं का संचालन विश्वसनीय ढंग से हो सके। बैंकिंग भर्ती परीक्षाओं की ऑनलाइन प्रणाली इसकी सफलता का प्रमाण है। केवल परीक्षा प्रणाली में सुधार पर्याप्त नहीं है। जब लाखों विद्यार्थी सीमित सीटों के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा में रहेंगे, तो प्रश्नपत्र लीक और अनियमितताओं का असर गंभीर बना रहेगा। इसलिए गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा संस्थानों और सीटों की संख्या बढ़ाना भी उतना ही आवश्यक है।

शिक्षा व्यवस्था को इस दिशा में आगे बढ़ना होगा कि किसी विद्यार्थी का भविष्य केवल एक परीक्षा पर निर्भर न रहे। इसके लिए बहु–स्तरीय मूल्यांकन, अनेक अवसर और सतत आकलन जैसी व्यवस्थाओं को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।भारत में प्रश्नपत्र लीक की समस्या नई नहीं है। पिछले दशक में भर्ती और प्रवेश परीक्षाओं में कई राज्यों तथा राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी घटनाएं बार–बार हुई हैं। यह किसी एक परीक्षा या संस्था की विफलता नहीं, बल्कि परीक्षा प्रशासन की संरचनात्मक कमजोरी को दर्शाता है। नीट प्रश्नपत्र लीक से शुरू हुआ यह आंदोलन अब शिक्षा सुधार के व्यापक राष्ट्रीय विमर्श का रूप ले चुका है। शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे उस उत्पन्न दबाव का प्रत्यक्ष परिणाम यदि केवल दोषियों को दंड दिलाने तक सीमित रहता है, तो इसका प्रभाव अल्पकालिक होगा। किंतु यदि इसके परिणामस्वरूप भारत की परीक्षा व्यवस्था अधिक पारदर्शी, तकनीकी रूप से सुरक्षित, जवाबदेह और छात्र–केंद्रित बनती है, तो यह भारतीय शिक्षा व्यवस्था के पुनर्गठन की ऐतिहासिक शुरुआत सिद्ध हो सकती है।

आने वाले दिनों में सरकार द्वारा प्रस्तावित कानूनी और संस्थागत सुधार तथा संसद में होने वाली चर्चा यह तय करेगी कि यह आंदोलन केवल तत्काल संकट तक सीमित रहता है या दीर्घकालिक परिवर्तन का आधार बनता है। और यदि यह नीति छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों व शैक्षिक संगठनों के साथ व्यापक विमर्श से बने, न कि केवल विषय विशेषज्ञों के सुझावों तक सीमित रहे, तो यह सुधार और भी सार्थक होगा।

प्रधान का नुकसान क्या राहुल का फायदा है?

प्रभु चावला

राजनीतिक आंदोलनों ने अक्सर सरकारों की दिशा बदल दी है। कुछ आंदोलनों ने सत्ता को उखाड़ फेंका है, कुछ ने नीतियों में उलटफेर किया है और कुछ ने शक्तिशाली सरकारों को जनता के गुस्से को शांत करने के लिए मंत्रियों की बलि देने पर मजबूर किया है। यही कुछ इस सप्ताहांत नई दिल्ली में देखने को मिला। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा सिर्फ एक प्रशासनिक फेरबदल से कहीं अधिक है। यह 12 वर्षों में पहली बार है कि निरंतर जन आंदोलन, जिसे विपक्ष के लगातार दबाव से बल मिला, नरेंद्र मोदी सरकार में किसी कैबिनेट मंत्री के इस्तीफे का कारण बना। जैसी कि उम्मीद थी, सोनिया गांधी और राहुल गांधी ने इस्तीफे को 'भारत के युवाओं की जीत' बताया। भाजपा ने इस व्याख्या को खारिज करते हुए कहा कि सरकार ने छात्रों के व्यापक हित में काम किया है। इन परस्पर विरोधी राजनीतिक बयानों के बीच एक महत्वपूर्ण सवाल उठता है–क्या यह इस्तीफा एक अलग–थलग रियायत है, या इसने मोदी सरकार द्वारा एक दशक से सावधानीपूर्वक बनाए गए राजनीतिक अजेयता के आभास को परास्त कर दिया है? या इसने राहुल गांधी के नेतृत्व वाले हतोत्साहित विपक्ष को फिर से सक्रिय कर दिया है? दिल्ली की भीषण गर्मी में, राहुल गांधी अपनी बहन प्रियंका गांधी वाड्रा के साथ प्रधानमंत्री आवास के बाहर पालथी मारकर धरने पर बैठे थे, जबकि जंतर–मंतर से, जो उनसे बस एक किलोमीटर दूर था, 'प्रधान हटाओ' के नारे गूंज रहे थे। हफ्तों से यही दृश्य दोहराया जा रहा था–कोचिंग सेंटर के छात्रों की भीड़ पर आंसू गैस के गोले दागे जा रहे थे, संसद के पास प्रदर्शनकारियों को तितर–बितर करने के लिए लाठीचार्ज किया जा रहा था और विपक्षी नेताओं का एक समूह बारी–बारी से माइक पर आकर नीट–यूजी पेपर लीक कांड को लेकर प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहा था। शनिवार को यह मांग पूरी हुई। एक ऐसी सरकार के लिए जिसने 12 साल तक कभी पीछे न हटने की कला में महारत हासिल की थी, यह एक दुर्लभ और शर्मनाक कदम था। मनमोहन सिंह के नेतृत्व में, यू.पी.ए. के 10 साल के कार्यकाल में लगभग आधा दर्जन मंत्रियों ने इसी तरह के दबाव में इस्तीफा दिया था। प्रधान का इस्तीफा एक अटूट सिलसिले को तोड़ता है और जिसे एक असामान्य तालमेल के माध्यम से हासिल किया गया–राहुल गांधी और कांग्रेस ने धरने और संसदीय व्यवधान का नेतृत्व किया, समाजवादी पार्टी से लेकर तृणमूल कांग्रेस तक के क्षेत्रीय सहयोगियों ने उनका साथ दिया, शिक्षा कार्यकर्त्ता सोनम वांगचुक ने 26 दिनों की भूख हड़ताल की और काक्रोच जनता पार्टी नामक एक युवा–संचालित विरोध आंदोलन ने उन छात्रों को लामबंद किया जिन्होंने पहले कभी पार्टी की राजनीति में भाग नहीं लिया था। एक इस्तीफे से 12 वर्षों का चुनावी वर्चस्व खत्म नहीं हो जाता और सरकार का अपना तर्क इसके विपरीत एक अलग कहानी पेश करता है–प्रधान ने अपने शब्दों में 'छात्रों के व्यापक हित में' इस्तीफा दिया, न कि किसी अपराध को स्वीकार करते हुए। मोदी ने परीक्षा प्रणाली में किसी भी गहरी व्यवस्थागत विफलता को स्वीकार नहीं किया है। सी.बी.आई. की मौजूदा जांच, रद्द हुई परीक्षा और दोबारा परीक्षा, खबरों के शांत होने के बाद शायद सरकार की हार मानने की बजाय निर्णायक कदम के रूप में सामने आ सकती है। आलोचकों का कहना है कि भाजपा ने इससे कहीं बड़े विवादों का सामना बिना झुके किया है और एक इस्तीफा, चाहे वह कितना भी प्रतीकात्मक क्यों न हो, राष्ट्रीय विपक्ष को पुनर्जीवित करने का कमजोर आधार है। मोदी की व्यक्तिगत लोकप्रियता और भाजपा की संगठनात्मक क्षमता, ज्यादातर मामलों में, काफी हद तक बरकरार है। फिर भी, राजनीतिक विश्लेषक इस क्षण को मात्र प्रतीकात्मक नहीं मान रहे। राहुल गांधी के उस करियर में यह पहली ठोस जीत है, जो नारों से अधिक परिणामों से परिभाषित हुआ है। कांग्रेस रणनीतिकारों के लिए सबक यह है कि शिकायत की राजनीति, जब मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं को सीधे तौर पर प्रभावित करने वाले किसी मुद्दे, जैसे धांधली वाली परीक्षा, छीना गया भविष्य, के साथ जोड़ दी जाए, तो यह अन्यथा प्रभावशाली भाजपा के खिलाफ निर्णायक साबित हो सकती है। क्या यह आगामी राज्य चुनावों में कारगर साबित होगी? अब असली परीक्षा उत्तर प्रदेश में होगी, जहां 2027 में विधानसभा चुनाव होने हैं। अखिलेश यादव और उनकी पत्नी डिंपल पहले ही इन विरोध प्रदर्शनों में राहुल और प्रियंका के साथ खड़े हो चुके हैं और उन्होंने पहले के चुनाव प्रचारों के 'यू.पी. के लड़के, यू.पी. की लड़कियां' नारे को फिर से जीवित कर दिया है।

बंटवारा के ट्रेलर लॉन्च पर इमोशनल हुए सनी देओल, राज कुमार संतोषी बोले–16 साल से इस फिल्म पर जुटे थे

सनी देओल अभिनीत फिल्म बंटवारा 1947 का ट्रेलर जारी हो चुका है। इस फिल्म का निर्देशन राजकुमार संतोषी ने किया है। आज मंगलवार को ट्रेलर लॉन्च इवेंट में फिल्म की स्टारकास्ट और डायरेक्टर मौजूद रहे। संतोषी ने इस फिल्म की मेकिंग को लेकर बात की और कहा कि वे पिछले डेढ़ दशक से इस फिल्म को बनाने में जुटे थे। इसी दौरान उन्होंने दिवंगत एक्टर धर्मेंद्र का जिक्र किया और बताया कि यही आखिरी फिल्म थी जो उन्होंने देखी थी। पिता के नाम का जिक्र आते ही सनी देओल की आंखें छलक आईं। ट्रेलर लॉन्च इवेंट में राजकुमार संतोषी ने सनी देओल के पिता और दिवंगत अभिनेता धर्मेंद्र को याद किया। उन्होंने बताया कि यह फिल्म उन्होंने भी देखी थी और देखकर काफी भावुक हो गए थे। संतोषी ने कहा, ध ारम जी का आशीर्वाद बहुत है फिल्म के लिए। नैरेशन जब सुना था तो वे बहुत इमोशनल थे। आंख में आंसू आ गये थे और बहुत आशीर्वाद दिया। धरम जी की मेरे ख्याल से यह आखिरी फिल्म है, जो उन्होंने देखी थी। तब भी उन्होंने बोला राज ये पिक्चर बहुत चलेगी। बहुत अच्छा काम किया है आप लोगों ने। एक तरफ राजकुमार संतोषी यह बता रहे थे और सनी देओल यह सुनकर भावुक हो गए। पिता को याद कर उनकी आंखें छलक आईं। निर्देशक राजकुमार संतोषी ने फिल्म बनाने की यात्रा पर बात करते हुए कहा, श्यह सिर्फ मेरे लिए एक फिल्म नहीं, बल्कि एक तपस्या है। मैं 2010 से यह फिल्म बनाने की कोशिश में हूं। सनी साहब को भी मैंने सुनाया। उन्हें भी पसंद आई। वे भी साथ में जुड़े हैं। हम दोनों 15–16 साल से कोशिश कर रहे हैं कि यह फिल्म बन जाए, लेकिन किसी का सपोर्ट नहीं मिला हमें। शुक्रगुजार हैं कि आमिर खान ने यह कहानी सुनी और उन्हें पसंद आई। उन्होंने प्रेरित किया कि बनाइए इसे। इस तरह बंटवारा शुरू हुई। मैं उनका भी शुक्रगुजार हूं। सनी साहब का बहुत शुक्रगुजार हूं। जैसा कि मैंने कहा यह एक तपस्या है मेरे लिए। मैं आज इमोशनल हूं। इतने वर्षों बाद आज यह दिन आया है कि आज आप सभी के साथ ट्रेलर शेयर कर रहा हूं। इवेंट में सनी देओल के बेटे करण देओल भी मौजूद रहे। राजकुमार संतोषी ने करण देओल के लिए कहा, यंग टैलेंट और बहुत ही प्रॉमिसिंग। मैंने इनके साथ काम किया है। फिल्म देखकर सब यही कहेंगे कि आगे जाकर ये सनी देओल का बहुत नाम करेंगे। वहीं करण देओल ने पिता को लेकर कहा, श्डैड के साथ काम करना, एक सपना पूरा होने जैसा है। आखिर पिता के साथ काम कौन नहीं करना चाहेगा। मेरी जिंदगी बन गई। थैंक्यू पापा। लव यूश। इस

> मैंने इनके साथ काम किया है। फिल्म देखकर सब यही कहेंगे कि आगे जाकर ये सनी देओल का बहुत नाम करेंगे। वहीं करण देओल ने पिता को लेकर कहा, डैड के साथ काम करना, एक सपना पूरा होने जैसा है।

दौरान सनी देओल भावुक होते नजर आए। जावेद अख्तर की भी निर्देशक ने खूब तारीफ की। उन्होंने कहा, श्डायरेक्शन में मेरे गुरू गोविंद नहलानी जी हैं। जावेद अख्तर भी मेरे लिए गुरु से कम नहीं हैं। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है और आगे भी सीखूंगा। सिर्फ फिल्म मेकिंग और राइटिंग नहीं, बल्कि इंसानियत भी। समय–समय पर वह जो हिम्मत दिखाते हैं, कहने में झिझकते नहीं हैं। मैं उससे बहुत प्रेरित होता हूं। फिल्म में वही प्रेरणा है। जावेद साहब ने जब से कहानी सुनी तो शुरू से आखिर तक सलाह देते रहे। राजकुमार संतोषी ने सनी देओल की तारीफ करते हुए कहा, इस फिल्म में लगातार लगे हुए हैं, एक इंच इध ार–उधर नहीं हुए। यही फिल्म करनी है तो यही करनी है। जैसे ही गदर 2 हिट हुई फिर भी बंटवारा तुरंत शुरू कर दी। मैं सनी देओल का बहुत शुक्रगुजार हूं।

धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे पर खुशी से झूमी सोनाक्षी सिन्हा, कहा, मुझे भी जेन–जी बनना है, सल्यूट है आपको

नीट परीक्षा पेपर लीक को लेकर छात्र कई दिनों से लगातार सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन कर रहे थे। इस आंदोलन में बड़ी संख्या में जेन–जी के युवाओं ने हिस्सा लिया और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की। शनिवार को धर्मेंद्र प्रध ाान के पद छोड़ने के बाद छात्रों के समर्थन में आवाज उठाने वाली कई फिल्मी सितारों ने इसे बड़े जीत बताया। इसी कड़ी में अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा ने भी अपनी प्रतिक्रिया देते हुए जेन–जी की सराहना की और उनके संघर्ष को सलाम किया। सोनाक्षी सिन्हा ने अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें वह धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की खबर पर खुशी जाहिर करती नजर आई। वीडियो में उन्होंने जेन–जी की जमकर की और यह स्वीकार किया कि वह पहले इस पीढ़ी को गंभीरता से नहीं लेती थीं। उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा, आप लोगों ने आज कमाल कर दिया। मैं तो एक आर्टिस्ट हूं लेकिन जेन–जी खुद एक आर्ट है। साथ ही उन्होंने इस पीढ़ी को पहले कम आंकने के लिए उनसे माफी भी मांगी। इसके बाद सोनाक्षी ने आगे वीडियो में कहा कि वह पहले जेन–जी को बिल्कुल गंभीरता से नहीं लेती थीं। उन्हें लगता था कि पीढ़ी थोड़ी देर काम करके थी थक जाती थी और उनसे ज्यादा उम्मीद नहीं की जा सकती लेकिन अब उनका नजरिया पूरी तरह बदल गया है। उन्होंने मजाकिया अंदाज में उठक–बैठक लगाकार जेन–जी से माफी मांगी और कहा की अब वह कभी भी इस पीढ़ी को कम नहीं समझेंगी। सोनाक्षी ने जेन–जी के संगर्ष और हौसले की तारीफ करते हुए कहा की वह उन्हें दिल से सलाम करती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि अब उनका मन करता है कि वह भी जेन–जी जैसे बनें और क्योंकि उन्होंने जो कर दिखाया है, वह सचमुच अविश्वसनीय है। इसी के साथ सोनाक्षी ने कैप्शन लिखा कि–सॉरी! मेरा मतलब था कि मुझे तुम पर गर्व है और तुम्हारा शुक्रिया। ब्रो अब... लगता है इस मिलेनियल का दिमाग फिर गया है। साथ ही आज की तारीख का जिक्र करते हुए लिखा है, 25.07.2026. क्या ही दिन है।

'वाइल्ड और बेबाक है', 'टॉक्सिक' को लेकर यश का बड़ा खुलासा, कहा– 'फिल्म सबका दिमाग हिला देगी'

यश की आने वाली फिल्म टॉक्सिक का ट्रेलर रिलीज हो चुका है। ट्रेलर सामने आने के बाद फैंस की एक्साइटमेंट काफी बढ़ गई है। फिल्म को लेकर यश ने कहा कि यह 'वाइल्ड' और 'बेबाक' है और इसे देखने के बाद लोग हैरान रह जाएंगे। यश ने एक इंटरव्यू में बताया कि पहली नजर में श्टॉक्सिकश एक बड़ी एक्शन फिल्म लग सकती है, लेकिन इसके पीछे गहरी भावनाएं छुपी हुई हैं। उन्होंने कहा, 'मुझे पता है यह फिल्म सबका दिमाग हिला देगी। यह एक रोलर–कोस्टर राइड जैसी है – बहुत वाइल्ड और बेबाक। लेकिन इसके साथ ही यह काफी गहरी भी है। ऊपर से यह बड़ी और अलग दिखेगी, जो फिल्म की खासियत है। लेकिन अंदर से यह बहुत इमोशनल फिल्म है। उन्होंने कहा, 'मुझे एक्शन बहुत पसंद है। मैं खुद एक्शन फिल्मों का फैन हूं और जब भी एक्शन होता है, मेरे अंदर का बच्चा खुश हो जाता है। मैं मॉनिटर पर ऐसे देखता हूं जैसे कोई फिल्म देख रहा हूं। एक्शन कोरियोग्राफर श्रश्र (च्मततल) ने शानदार काम किया है। 26 तारीख को जब टॉक्सिकश रिलीज होगी, तब आप देखेंगे हमने कैसा एक्शन किया है।' इस फिल्म का निर्देशन गीतू मोहनदास ने किया है और यह 26 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म में यश के साथ नयनतारा, कियारा आडवाणी, तारा सुतारिया और हुमा कुरेशी जैसे बड़े सितारे नजर आएंगे।

'स्पाइडर मैन–ब्रांड न्यू डे' प्रीमियर पर फैंस ने दी प्रतिक्रिया, टॉम हॉलैंड छा गएए यूजर्स बोले– बेहतरीन अनुभव

मार्वल स्टूडियो की श्स्पाइडर मैन– ब्रांड न्यू डेश की रिलीज का फैंस लंबे वक्त से इंतजार कर रहे हैं। सोमवार रात कुछ फैंस को इस फिल्म के प्रीमियर में शामिल होने का मौका मिला। फिल्म को थिएटर में रिलीज होने में अभी समय है। लेकिन अब सोशल मीडिया पर इसके पहले प्रीमियर के बाद फैंस के रिएक्शन सामने आ रहे हैं। जानिए, फिल्म स्पाइडर मैन– ब्रांड न्यू डे फैंस को कैसी लगी। एक फैन ने एक्स (ट्विटर) अकाउंट पर फिल्म के प्रीमियर के बाद कमेंट लिखा, 'मेरी चिंता न करें। स्पाइडर मैन– ब्रांड न्यू डे देखने के बाद मैं बस यहां बैठकर रो रहा हूं। यह एक जबरदस्त फिल्म है, जो 5 अलग–अलग कहानियों को बराबर अहमियत देती है। हर कहानी पिछली वाली से बेहतर है। यह थोड़ी भारी–भरकम लग सकती है लेकिन सब कुछ बहुत खूबसूरती से जुड़ता है।' एक और यूजर ने एक्स (ट्विटर) अकाउंट पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'मैं तो हैरान रह गया। मुझे यह फिल्म बहुत पसंद आई। डेस्टिन डैनियल क्रेटन और टॉम हॉलैंड ने इसमें अपनी पूरी जान लगा दी है। इसका नतीजा जबरदस्त रहा है। यह फिल्म बहुत बड़ी होने वाली है। हम लंबे समय तक इसकी चर्चा करते रहेंगे। मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ कि इसमें सब कुछ कितनी अच्छी तरह से बैलेंस किया गया है, इमोशन, ह्यूमर, एक्शन, प्रैक्टिकल बनाम विजुअल इफेक्ट्स, स्कोर और सिनेमैटोग्राफी। बड़े–बड़े सेट होने के बावजूद यह फिल्म बहुत ही हैंडमेड और दिल को छू लेने वाली लगी। इसके लिए किया गया इंतजार पूरी तरह से सफल रहा' कुछ फैंस तो प्रीमियर में फिल्म देखकर बहुत भावुक हो गए। एक फैन ने सोशल मीडिया पर कमेंट करते हुए लिखा, 'यह फिल्म सच में बहुत शानदार है।' वह आगे लिखता है, 'यकीन नहीं होता कि इस फिल्म ने मुझे कितना भावुक कर दिया। फिल्म के बीच में एक पल ऐसा आया जिसने मुझे पूरी तरह चौंका दिया। हैरानी की बात है कि उसके बाद मैं खुद को कैसे संभाल पाया, मैं ही जानता हूं।।' इसी तरह के इमोशनल कमेंट कई और फैंस ने किए हैं। साथ ही एक्टर्स की भी खूब तारीफ की है। एक फैन ने ट्विटर पर लिखा, ' डायरेक्टर की कुर्सी पर जॉन वॉट्स की जगह डेस्टिन डैनियल क्रेटन आ गए हैं। यह पिछली फिल्मों जितनी मजेदार भी नहीं है। फिर भी इस फिल्म की जान और इसके सबसे अच्छे सीन हॉलैंड, जेंडाया और जैकब बैटलन के साथ हैं। क्रेटन ने उनसे जो कुछ भी करने को कहा, उन्होंने उसे बखूबी निभाया है।' स्पाइडर मैन– ब्रांड न्यू डे में लीड रोल में टॉम हॉलैंड और जेंडया हैं। टॉम ने स्पाइडर मैन का रोल किया है। उनके फैंस इस किरदार में खूब पसंद करते हैं। यह सुपरहीरो फिल्म 31 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। अनुमान है कि यह फिल्म पहले दिन कमाई की कई रिकॉर्ड तोड़ सकती है।

प्रेग्नेंसी के दौरान कभी नहीं भूलती महिलाएं ये दो बातें, मरने तक रखती हैं याद दिल दुखने पर भी रहती हैं चुप

महिलाओं को भगवान ने ऐसा दिल दिया है कि वह हर किसी बात को बहुत ही आसानी से सहन कर लेती हैं। परिवार के तानों से लेकर समाज और ससुराल की बातें उनके दिमाग में घर नहीं करती लेकिन 2 बातें ऐसे होती हैं जिसको वह कभी नहीं भूल पाती। यह दो बातें महिलाओं के दिल में ऐसे घर करती हैं जिसे वह मरने तक नहीं भूल पाती। तो चलिए आज आपको बताते हैं कि ऐसा क्या है जिसको महिलाएं कभी नहीं भूल पाती। तो चलिए जानते हैं इनके बारे में...

आखिर कौन सी है ऐसी दो बातें?

महिलाओं को उनके प्रेग्नेंसी पीरियड्स में कैसे रखा जाता है और डिलीवरी के बाद उनकी कैसे देखभाल की जाती है यह दो बातें वह हमेशा याद रखती हैं और इन बातों को वह मरने तक नहीं भूल पाती हैं। इसके अलावा इन दोनों समय में उनका सबसे ज्यादा साथ कितने दिया और किसने उनका दिल दुखाया है यह भी महिलाएं पूरा याद रखते हैं।

कैसे करें प्रेग्नेंसी में महिलाओं की केयर?

खान–पान का रखें ध्यान

गर्भवती महिलाओं को अपने खान–पान का खास ध्यान रखना चाहिए।। उन्हें इस दौरान क्या खाना चाहिए,क्या नहीं यह भी पूरा ध्यान रखें। हर तीन घंटे में कुछ न कुछ खिलाते रहें। इसके अलावा गर्भवती महिलाओं पौष्टिक आहार का ही सेवन करें।

बाहर का खाना करें अवॉयड

इसके अलावा गर्भवती महिलाओं को बाहर का खाना भी नहीं खाना चाहिए। बाहर का खाना खाने से बीमारियों को खतरा बढ़ने लगता है। इसके अलावा यह बच्चे के स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक हो सकता है। गर्भवस्था में ज्यादा तेल और मसाले वाले खाने बिल्कुल भी न खाएं।

रोज करें हल्की–फुल्की एक्सरसाइज

व्यायाम भी आप गर्भवस्था के दौरान जरुर करें। ज्यादा हैवी एक्सरसाइज नहीं लेकिन हल्का–फुल्का व्यायाम आप अपनी डेली रुटीन में डॉक्टर से पूछकर कर सकते हैं।

ट्रेवलिंग न करें

गर्भावस्था के दौरान आप ज्यादा यात्रा न करें। इसके अलावा अकेले यात्रा करने से परहेज करें। यदि आपको किसी कारणवश यात्रा करनी पड़ रही है तो अपनी जरुरी दवाईयां हमेशा साथ में रखें।

घर के सदस्य करें अच्छी देखभाल

इसके अलावा गर्भवस्था में महिलाओं की घर के सदस्यों को भी अच्छे से देखभाल करनी चाहिए। क्योंकि यह दौर उनके लिए बहुत ही खास होता है ऐसे में उनका इसमें कौन साथ देता है कौन नहीं यह बात वह हमेशा अपने दिमाग में रखती हैं।

किचन में रखे डिब्बे के ढक्कन हो गए हैं ढीले तो इन 5 तरीकों से करें टाइट

महिलाओं की हमेशा एक ही शिकायत रहती है कि किचन में पड़े डिब्बों के ढकन ढीले होने लगते हैं। इसके कारण बरसाती मौसम में किचन में रखे हुए मसाले खराब होने लगते हैं। अगर इनको अच्छे से टाइट न किया जाए तो बरसाती हवा पड़ने के

कारण इनमें रखी चीजें में भी नमी आने लगती है या फिर डिब्बा नीचे गिरने से यह टूटने लगते हैं। ऐसे में अगर आपके साथ भी यही परेशानी आती हैं तो आज आपको कुछ ऐसे हैक्स बताते हैं जिनके जरिए आप डिब्बों के ढक्कन टाइट कर सकते हैं। तो चलिए जानते हैं इनके बारे में....

बदल कर देखें ढक्कन

अगर आपको लग रहा है कि डिब्बे का ढक्कन ढीला हो गया है तो आप इसे किसी और ढक्कन के साथ बदलकर देंखे। कई बार ढक्कन बदलने से भी यह ठीक हो जाता है। इसके अलावा आपको बता दें कि सिर्फ स्टील, पीतल और एल्युमीनियम के

ढक्कन ही बदले जा सकते हैं। इसके अलावा कोई ढक्कन न बदलें नहीं तो वह खराब भी हो सकता है।

ऐसे डिब्बे करवाएं ठीक

अगर आपके स्टिल के बर्तनों के ढक्कन चूड़ी वाले हैं तो आप इन्हें बर्तन बेचने वालों से ठीक करवा सकते हैं। बर्तन बेचने वाले ढक्कन की चूड़ियां ठीक कर देंगे।

ऐसे टाइट करें प्लास्टिक के डिब्बे

प्लास्टिक के डिब्बों को टाइट करवाने के लिए आप रबर रींग की मदद ले सकते हैं। डिब्बे पर रबर लगाने के बाद ढक्कन लगाने से यह लूच नहीं होता और हमेशा डिब्बे टाइट रहते हैं।

पॉलिथिन से करें टाइट

लूज डिब्बे को टाइट करने के लिए आप पॉलीथीन इस्तेमाल कर सकते हैं। डिब्बे के मुंह पर पॉलिथिन रखने के बाद ढक्कन लगा दें। ऐसा करने से डिब्बे का लूज ढक्कन टाइट हो जाता है।

खोलते और बंद करते समय रखें ध्यान

इसके अलावा जब भी आप डिब्बे को खोल या फिर बंद कर रहे हैं तो इसे ज्यादा जल्दी न बंद करें। इसके अलावा चूड़ी के हिसाब से डिब्बे को घुमाते हुए ढक्कन बंद करें। इस तरह आपके डिब्बे का ढक्कन लूज नहीं होगा।

क्या आप भी हैं एक बेटी की मां तो जानिए आखिर क्यों छोटी उम्र में लड़कियों को आते हैं पीरियड्स ?

गलत खान–पान और खराब लाइफस्टाइल के कारण कई तरह की बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है वहीं इसके कारण आजकल लड़कियों को पीरियड्स भी जल्दी आने लगते हैं। एक्सपर्ट्स के अनुसार,पीरियड्स आने की सही उम्र 12 साल और इससे ज्यादा होती है परंतु कुछ लड़कियां ऐसी हैं जिन्हें 8 से 9 साल में ही पीरियड्स आने लगते हैं। असामान्य पीरियड्स आने के कारण लड़कियां अस्वस्थ भी रहने लगती हैं। ऐसे में मां को अपनी बेटियों को समय रहते ही इसके बारे में बताना चाहिए। इसके अलावा आज आपको बताते हैं कि एर्ली एज पीरियड्स क्यों आते हैं और आप इससे अपने बेटी को कैसे बचा सकते हैं...

मोटापा

आजकल बाहरी चीजों का सेवन करने से शरीर में फैट जमा होने लगता है। शरीर में फैट जमा होने के कारण बॉडी में एस्ट्रोजन और इंसुलिन का लेवल बढ़ जाता है जिसके कारण एर्ली ऐज पीरियड्स की समस्या हो सकती है।

ज्यादा प्लास्टिक इस्तेमाल करना

प्लास्टिक की बोतलें, टिफिन और कंटेनर में खाना रखना भी सेहत को नुकसान पहुंचता है। इनमें मौजूद कैमिकल शरीर में जिनोएस्ट्रोजन का स्तर बढ़ाते हैं जिससे कम उम्र में पीरियड्स आने की संभावना बढ़ने लगती है।

जंक फूड और प्रोसेस्ड फूड

आजकल बच्चे जंक फूड और प्रोसेस्ड फूड्स पर बहुत जल्दी जोर देते हैं ऐसे में इसके कारण मोटापा तो आता ही है लेकिन इसके कारण इंसुलिन का स्तर बढ़ता है और प्ब्यूियरटी उम्र में जल्दी पीरियड्स जैसी समस्या आने लगती है।

कैसे करें बेटियों की केयर?

करवाएं फिजिकल एक्टिविटी

आजकल बच्चे बचपन से ही मोटापे का शिकार होने लगते हैं। ऐसे में बच्चों के शरीर को हैल्दी रखने के लिए आप उन्हें नियमित शारीरिक गतिविधि करनी सिखाएं। आउटडोर गेम्स, खेल और सैर जैसी एक्टिविटीज के साथ बच्चे हेल्दी रहेंगे। ऐसे में आप इनकी आदत अपने लड़कियों को जरुर डालें।

खिलाएं हैल्दी भोजन

बच्चे को हमेशा हैल्दी खाने की आदत ही डालें। रिफाइंड शुगर और रिफाइंड आटा में पाए जाने वाले पोषक तत्व उनके स्वास्त्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। आप फल, सब्जियां, साबुत अनाज और होल ग्रेन जैसी चीजें अपनी बेटी को खिला सकते हैं यह उनकी ऑवरऑल हेल्थ के लिए फायदेमंद रहेगा।

प्लास्टिक करें अवॉयड

बच्चे को बीपीए और थैलेट्स जैसे हानिकारक पदार्थों से भी दूर रखें। इनकी जगह आप खाना कांच के कंटेनर और पानी को भी इनमें स्टोर कर सकते हैं। इसके अलावा प्लास्टिक रैप और डिब्बाबंद खाने वाली चीजों से भी लड़कियों को दूर रखें। इनमें मौजूद कैमिकल्स बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं।

न दें ऐसे डेयरी प्रोडक्ट्स

इसके अलावा आप अपनी बेटी को ऐसे डेयरी प्रोडक्ट्स ही दें जिनमें हार्मोन्स न हो। गाय के दूध में भी कई बार मिलावट की जाती है। ऐसे में आप उन्हें ऐसी चीजों देने से परहेज करें।

एवरग्रीन गजरा देगा भीड़ से हटके लुक, शादी हो या पार्टी करें हेयरस्टाइल शामिल

खूबसूरत दिखने के लिए महिलाएं क्या कुछ नहीं करती हैं। कपड़े हों या फिर हेयरस्टाइल वह खुद को एक अलग ट्विस्ट देने की कोशिश करती हैं।

अगर हेयरस्टाइल की बात की जाए तो गजरा महिलाओं की पहली पसंद है। गजरा लगाने का फैशन कोई नया नहीं बल्कि काफी पुराना है। भले ही आज जमाना मॉर्डन हो गया हो लेकिन इसका क्रेज उतना ही है जैसे पहले थे। आज आपको गजरे के ऐसे आइडियाज बताते हैं जिनके जरिए आप अपने बालों को एक अलग लुक दे सकती हैं।

गजरा बन

जुड़े के साथ गजरा लगाने का ट्रैंड तो काफी पुराना है। वहीं अगर आप किसी फंक्शन, त्यौहार या फिर पार्टी में गजरा लगाने की सोच रही हैं तो इस तरह बन बनाकर गजरा लगा सकती हैं। बनारसी साड़ी, सूट या फिर लहंगे के साथ इस तरह का हेयर स्टाइल खूब जचता है।

क्लिप के साथ गजरा

अगर आप बालों में ज्यादा हैवी गजरा नहीं लगाना चाहती हैं तो इस तरह हल्के से कर्ल डालकर क्लिप के साथ गजरा सजा सकती हैं। पीन के साथ इसे टाइअप जरूर कर लें ताकि यह आपके बालों से न उतरे। इस तरह का आपको खूबसूरत दिखाने में कामयाब रहेगा।

चोटी में गजरा

जरूरी नहीं है कि गजरा जुड़े के साथ ही अच्छा लगता है अगर आपके बाल लंबे हैं तो इस तरह चोटी बनाकर भी गजरा लगाया जा सकता है। आप चाहें तो चोटी को गजरे की अलग अलग लेयर से भी सजा सकती हैं। ये हेयर स्टाइल बनाना आसान भी है।

खुले बालों में गजरा

खुले बालों को गॉर्जियस लुक देने के लिए भी गजरा लगाया जा सकता है। आप चाहें तो आगे से फ्रेंच स्टाइल चोटी बनाकर पीछे बालों में गजरा सिंपल तरीके से लगा सकती हैं। एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर की तरह सिंपल सोबर सूट के साथ इस तरह का हेयरस्टाइल आपके लुक को और भी निखार देगा।

फ्लावर गजरा

इन दिनों कलरफुल गजरा लगाना का भी खूब ट्रेंड चल रहा है। कलरफुल फूलों वाले गजरे के साथ आप खुद को भीड़ से हटके लुक दे सकती हैं। रंग–बिरंगे फूलों में आपको कई तरह की वैरायटी मिल जाएगी। अपनी पसंद के अनुसार, इन्हें चूज करके बालों में लगाएं। लाल गुलाब के फूलों के गजरा भी खूब पसंद किया जा रहा है।

हाफ बन गजरा

बॉलीवुड एक्ट्रेस श्रद्धा कपूर के जैसे भी आप बालों का छोटा सा बन बनाकर इस तरह गजरा लगा सकती हैं। यंग गर्ल्स के लिए यह हेयरस्टाइल एकदम परफेक्ट रहेगा।

एड़ियों और जोड़ों में दर्द की वजह यूरिक एसिड, जानिए इस रोग को खत्म करने का 1 आसान उपाय

अगर आपकी एड़ियों और जोड़ों में लगातार दर्द रहता है तो इसका कारण यूरिक एसिड भी हो सकता हैं। यूरिक एसिड की समस्या तब शुरू होती है जब किडनी शरीर में बनने वाले यूरिक एसिड को ठीक से फिल्टर कर यूरिन के रास्ते बाहर नहीं कर पाती और ये एसिड जोड़ों में ही जमा होने लगता है। इसी के चलते जोड़ों में दर्द और पैरों में सूजन दिखने लगती है। अगर इसे कंट्रोल ना किया जाए तो यह गाउट यानि गठिया बन जाता है। यूरिक एसिड बढ़ने का कारण भी खराब लाइफस्टाइल ही हैं। अगर आप प्रोटीन बहुत ज्यादा ले रहे हैं और बाकी तत्व कम तो शरीर में सारा लेवल गड़बड़ा जाता है। जंक फूड खाना, पानी कम पीना और फिजिकल एक्टिविटी ना करना आदि।

अब इसे कंट्रोल कैसे करना है...

एक्सपर्ट्स के अनुसार, यूरिक एसिड लेवल को आप घरेलू तरीके से कंट्रोल में कर सकते हैं। इसके लिए गिलोय के पत्तों का इस्तेमाल करें। आप गिलोय का पानी उबाल कर पी सकते हैं।

अखरोट का करें सेवन

गिलोय के अलावा एक अखरोट भी इसे कंट्रोल में रखेगा। अखरोट में ओमेगा–3 भरपूर होता है। इसमें एंटी–इंफ्लेमेटरी गुणों के साथ–साथ विटामिन बी6, कॉपर, फॉस्फोरस और मैग्नीशियम जैसे कई पोषक तत्व भी पाए जाते हैं। अखरोट में हैल्दी प्रोटीन भरपूर होता है जो घुटनों में जमे यूरिक एसिड के क्रिस्टल्स को बाहर निकालने का काम करता है। दिन के 2 से 3 अखरोट खाने से आपको फायदा होगा। आप सलाद में डालकर, स्मूदी और शेक में डालकर इसका सेवन कर सकते हैं। अगर अखरोट की तासीर गर्म लगती हैं तो आप इसे पानी में भिगोकर खा सकते हैं। इससे यूरिक एसिड तो कम होगा ही साथ ही में यह दिल और दिमाग दोनों के लिए फायदेमंद है। इससे तनान कम होता है और इम्यूनिटी स्ट्रांग होती है।

यूरिक एसिड का लेवल कंट्रोल करने के लिए लाइफस्टाइल को हैल्दी बनाए।

30 से 45 मिनट हलकी फुल्की एक्सरसाइज करें।

हाई प्रोटीन चीजें जैसे राजमाह, मटर, चने और छिलके वाली दालों का सेवन डिनर में ना करें।

हरी सब्जियों का जूस पीएं।

रात का खाना जल्दी खाएं।

8 से 10 गिलास भरपूर पानी पीएं।

8 घंटे की नींद लें।

मेटाबॉलिक रेट बढ़ाएं।

स्ट्रेस लेने से बचें। योग व मेडिटेशन का सहारा लें।

एल्कोहल का सेवन ना करें। ज्यादा नॉनवेज जैसे रेडमीट खाने से बचें। याद रखिए यह रोग भी लाइफस्टाइल से जुड़ा है जब तक आप हैल्दी लाइफस्टाइल नहीं अपनाएंगे दवा भी असर नहीं दिखाएगी।

संक्षिप्त

बाबर ने टेस्ट कप्तान बनने के लिए PCB के सामने रखी क्या शर्त? मचा बवाल

कराची,एजेंसी। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान बाबर आजम को लेकर एक बड़ा दावा सामने आया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, बाबर ने टेस्ट टीम की कप्तानी तभी स्वीकार की, जब उन्हें भविष्य में तीनों फॉर्मेट की कप्तानी सौंपने का आश्वासन दिया गया। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (च्ब्ठ) ने हाल ही में उन्हें टेस्ट टीम की कमान सौंपी है। टेलीकॉम एशिया स्पोर्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, टेस्ट कप्तान की घोषणा से पहले दो चयनकर्ताओं ने बाबर आजम से मुलाकात की थी। रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से दावा किया गया है कि बाबर ने साफ कहा था कि वह सिर्फ टेस्ट टीम के कप्तान नहीं बनना चाहते, बल्कि उनका लक्ष्य तीनों फॉर्मेट में पाकिस्तान की कप्तानी करना है। रिपोर्ट के मुताबिक, चयनकर्ताओं ने उन्हें भरोसा दिलाया कि अगर पाकिस्तान वेस्टइंडीज और इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों में अच्छा प्रदर्शन करता है, तो उन्हें वनडे और टी20 टीम की कप्तानी भी सौंपी जा सकती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि मौजूदा टेस्ट कप्तान शान मसूद के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद चयनकर्ताओं के पास बाबर आजम से बेहतर विकल्प नहीं था। दिसंबर 2023 से कप्तानी संभालने वाले शान मसूद की अगुआई में पाकिस्तान ने 16 टेस्ट खेले, जिनमें से 12 में टीम को हार का सामना करना पड़ा। रिपोर्ट के मुताबिक, चयनकर्ताओं ने सबसे पहले सलमान आगा से टेस्ट कप्तानी संभालने का प्रस्ताव रखा था। हालांकि उन्होंने यह जिम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया। बताया गया कि टीम के खराब माहौल और लगातार कमजोर प्रदर्शन को देखते हुए उन्होंने यह जिम्मेदारी नहीं ली। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि टी20 विश्व कप में पाकिस्तान के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद सलमान आगा की कप्तानी की भी आलोचना हुई थी। रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि नवंबर 2023 में जब बाबर आजम ने तीनों फॉर्मेट की कप्तानी छोड़ी थी, तब उन्हें केवल एक फॉर्मेट की कप्तानी जारी रखने का प्रस्ताव मिला था। हालांकि उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वह किसी एक फॉर्मेट के बजाय सभी फॉर्मेट की कप्तानी करना चाहते थे। इस समय पाकिस्तान की वनडे टीम की कमान तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी के पास है। हालांकि रिपोर्ट में पूर्व बल्लेबाज बासित अली के हवाले से दावा किया गया है कि भविष्य में बाबर आजम को फिर से तीनों फॉर्मेट की कप्तानी सौंपी जा सकती है। उनका मानना है कि यदि परिस्थितियां बदलीं तो बाबर पाकिस्तान के अगले ऑल–फॉर्मेट कप्तान बन सकते हैं।

श्रीलंका दौरे के लिए भारतीय टेस्ट टीम का एलान, किसकी हुई वापसी और किस नए खिलाड़ी को मिला मौका?

मुंबई,एजेंसी। बीसीसीआई ने 15 अगस्त से शुरू होने वाली श्रीलंका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए भारतीय टीम की घोषणा कर दी है। शुभमन गिल को कप्तान और केएल राहुल को उपकप्तान बनाया गया है। मध्य प्रदेश के ऑलराउंडर सारांश जैन को पहली बार टेस्ट टीम में जगह मिली है। वहीं साई सुदर्शन और जसप्रीत बुमराह का चयन फिटनेस क्लियरेंस के अधीन रहेगा। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (ठब्ब्) ने मंगलवार को श्रीलंका के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए 15 सदस्यीय भारतीय टीम की घोषणा कर दी। दोनों देशों के बीच टेस्ट सीरीज की शुरुआत 15 अगस्त से होगी। टीम की कमान एक बार फिर शुभमन गिल के हाथों में सौंपी गई है, जबकि अनुभवी बल्लेबाज केएल राहुल को उपकप्तान बनाया गया है। घरेलू क्रिकेट में लगातार शानदार प्रदर्शन करने वाले इस ऑलराउंडर को पहली बार सीनियर टीम से बुलावा मिला है। विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी ऋषभ पंत और ध्रुव जुरेल संभालेंगे। बल्लेबाजी में यशस्वी जायसवाल, साई सुदर्शन और देवदत्त पडिक्कल को भी जगह मिली है। ऑलराउंडर के रूप में रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव और मानव सुथार टीम का हिस्सा हैं। बीसीसीआई ने स्पष्ट किया कि वॉशिंगटन सुंदर पहले टेस्ट के लिए चयन के लिए उपलब्ध नहीं थे, इसलिए उन्हें टीम में शामिल नहीं किया गया। तेज गेंदबाजी आक्रमण की अगुआई जसप्रीत बुमराह करेंगे। उनके साथ मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा और गुरनूर बराड़ को भी टीम में शामिल किया गया है। हालांकि, बीसीसीआई ने स्पष्ट किया है कि साई सुदर्शन और जसप्रीत बुमराह की उपलब्धता बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (ब्ब्म्) से फिटनेस मंजूरी मिलने पर निर्भर करेगी। भारत ने पिछला टेस्ट अफगानिस्तान के खिलाफ खेला था। उस टीम से तुलना करें तो नीतीश रेड्डी, हर्ष दुबे, वॉशिंगटन सुंदर मौजूदा टीम का हिस्सा नहीं हैं। वहीं, रवींद्र जडेजा और बुमराह की टेस्ट टीम में वापसी हुई है। हालांकि, बुमराह का खेलना अभी तय नहीं है। इसके अलावा सारांश नया चेहरा हैं। जडेजा ने पिछला टेस्ट पिछले साल नवंबर में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बरसापारा स्टेडियम में खेला था।

कौन हैं सारांश जैन? 33 साल की उम्र में पहली बार टीम इंडिया में बुलावा, क्यों खास है उनकी कहानी?

मुंबई,एजेंसी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने मंगलवार को श्रीलंका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए टीम का एलान किया। इसमें एक नए नाम ने सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। यह नाम है मध्य प्रदेश के 33 वर्षीय स्पिन ऑलराउंडर सारांश जैन का। लंबे समय तक घरेलू क्रिकेट में लगातार शानदार प्रदर्शन करने वाले सारांश को आखिरकार भारतीय टेस्ट टीम में पहली बार जगह मिली है। सारांश को टीम में वॉशिंगटन सुंदर की जगह शामिल किया गया है। सुंदर हैमस्ट्रिंग चोट के कारण 15 अगस्त से गॉल में शुरू होने वाले पहले टेस्ट के लिए उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे में चयनकर्ताओं ने अनुभव और मौजूदा फॉर्म को देखते हुए सारांश पर भरोसा जताया है। सारांश जैन ने 2014 के आखिर में मध्य प्रदेश के लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट में डेब्यू किया था। तब से वह घरेलू क्रिकेट में टीम के सबसे भरोसेमंद खिलाड़ियों में शामिल रहे हैं। दाएं हाथ के ऑफ स्पिनर और बाएं हाथ के उपयोगी बल्लेबाज के रूप में उन्होंने कई बार अपनी टीम को मुश्किल परिस्थितियों से बाहर निकाला। घरेलू क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद उन्हें राष्ट्रीय टीम का बुलावा नहीं मिला। हालांकि उन्होंने हार नहीं मानी और हर सीजन में अपने प्रदर्शन से चयनकर्ताओं का ध्यान खींचते रहे। करीब 11 साल के इंतजार के बाद उनकी मेहनत रंग लाई और अब उन्हें भारतीय टेस्ट टीम में जगह मिल गई है। सारांश जैन का प्रथम श्रेणी रिकॉर्ड उनकी उपयोगिता को साफ दर्शाता है। उन्होंने 54 प्रथम श्रेणी मैचों में 188 विकेट लिए हैं। इस दौरान उनका गेंदबाजी औसत 27.30 रहा है और उन्होंने 10 बार पारी में पांच विकेट भी लिए हैं। बल्लेबाजी में भी उन्होंने अहम योगदान दिया है। सारांश के नाम 2,223 रन दर्ज हैं, जिन्हें उन्होंने 31.75 की औसत से बनाया है। उनके खाते में दो शतक और 14 अर्धशतक भी हैं। यही वजह है कि उन्हें एक भरोसेमंद स्पिन ऑलराउंडर माना जाता है। सारांश जैन के

परिवार में क्रिकेट की विरासत रही है। उनके पिता सुबोध जैन मध्य प्रदेश के लिए रणजी ट्रॉफी खेल चुके हैं। हालांकि, सारांश के करियर के शुरुआती दौर में परिवार को एक कठिन समय से गुजरना पड़ा। जब सारांश ऑस्ट्रेलिया दौरे पर क्रिकेट खेलने गए हुए थे, उसी दौरान उनके पिता का कैंसर का ऑपरेशन हुआ। सर्जरी के बाद वह बोल नहीं पा रहे थे, इसलिए उन्होंने अपने बेटे के लिए एक चिट्ठी लिखी। उस चिट्ठी में उन्होंने सारांश से क्रिकेट पर पूरा ध्यान केंद्रित रखने को कहा। सारांश ने उस हस्तलिखित संदेश को आज तक संभालकर रखा है और भारत की टेस्ट टीम में जगह मिलने तक के लंबे इंतजार के दौरान वही चिट्ठी उन्हें लगातार प्रेरित करती रही। अगर सारांश जैन को गॉल टेस्ट में डेब्यू का मौका मिलता है, तो वह 2021 में ब्रिस्बेन टेस्ट में वॉशिंगटन सुंदर के डेब्यू के बाद भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में डेब्यू करने वाले पहले विशेषज्ञ ऑफ स्पिनर बन जाएंगे। सारांश जैन की सफलता किसी एक शानदार सीजन की देन नहीं है। उन्होंने कई वर्षों तक घरेलू क्रिकेट में लगातार बेहतरीन प्रदर्शन कर अपनी पहचान बनाई। वह 2021–22 रणजी ट्रॉफी जीतने वाली मध्य प्रदेश टीम के अहम सदस्य रहे। नॉकआउट मुकाबलों में उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया और मुंबई के खिलाफ फाइनल में महत्वपूर्ण 57 रन बनाकर टीम को पहली बार रणजी ट्रॉफी का चौंपियन बनाने में बड़ी भूमिका निभाई। रणजी ट्रॉफी 2022–23 में सारांश ने बल्ले और गेंद दोनों से कमाल किया। उन्होंने 360 रन बनाए और 35 विकेट हासिल किए। इस शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ ऑलराउंडर के रूप में लाला अमरनाथ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके बाद भी उनका शानदार प्रदर्शन जारी रहा। अगले रणजी सीजन में उन्होंने 57.55 की औसत से 518 रन बनाए और 20.43 की औसत से 30 विकेट लेकर खुद को देश के सबसे भरोसेमंद घरेलू ऑलराउंडरों में शामिल कर लिया। मुख्य कोच गौतम गंभीर ऐसी टेस्ट टीम बनाने के पक्षधर रहे हैं, जिसमें बल्लेबाजी क्रम आठवें नंबर तक मजबूत हो। सारांश जैन का प्रोफाइल इसी सोच के अनुरूप है। वह एक तरफ लंबे स्पैल फेंकने वाले ऑफ स्पिनर हैं तो दूसरी ओर निचले क्रम में उपयोगी बल्लेबाजी भी कर सकते हैं। रवींद्र जडेजा और कुलदीप यादव जैसे प्रमुख स्पिनरों के साथ सारांश टीम को अतिरिक्त संतुलन देने में सक्षम हैं। यही वजह रही कि वॉशिंगटन सुंदर की गैरमौजूदगी में टीम प्रबंधन ने उन पर भरोसा जताया। अब सभी की नजर इस बात पर होगी कि घरेलू क्रिकेट के इस अनुभवी ऑलराउंडर को क्या श्रीलंका में टेस्ट कैप पहनने का मौका मिलता है। अगर ऐसा होता है तो 33 वर्षीय सारांश जैन के लिए यह वर्षों की मेहनत और धैर्य का सबसे बड़ा इनाम होगा।

सोनम और हिमांशु का दमदार प्रदर्शन, 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम में कांस्य पदक अपने नाम किया

हांगझू,एजेंसी। राइफल निशानेबाज सोनम उत्तम मस्कर और हिमांशु ढिल्लों ने आईएसएसएफ विश्व कप में 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम में कांस्य पदक जीता। भारत के अब इस विश्व कप में एक स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य पदक हो गए हैं ।दक्षिण–एशियाई और प्रवासी सोनम ने 317. 2 और हिमांशु ने 317. 4 स्कोर किया और दोनों का कुल स्कोर 634 .6 रहा। इलावेनिल वालारिवन (316.8) और पार्थ राकेश माने (317.4) 634.2 अंकों के साथ उनसे पीछे रहे। दोनों भारतीयों ने क्वालिफिकेशन राउंड में शानदार प्रदर्शन करते हुए फाइनल में जगह बनाई। सोनम (317.2) और हिमांशु (317.4) ने मिलकर कुल 634.6 अंक का क्वालिफिकेशन स्कोर बनाया। इस बीच, एलावेनिल वालारिवन (316.8) और पार्थ राकेश माने (317.4) की जोड़ी ने उनके ठीक पीछे 634.2 के कुल स्कोर के साथ क्वालिफाई किया। फाइनल में, सोनम और हिमांशु ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक पक्का किया। पदक जीतने पर सोनम ने कहा, यह एक मुश्किल मुकाबला था और कुल मिलाकर अनुभव बहुत अच्छा था। पदक जीतना हमेशा जरूरी होता है क्योंकि इससे हमें आगे के कामों के लिए आत्मविश्वास मिलता है। अनुभव किसी भी चीज से ज्यादा मायने रखता है। यह प्रदर्शन हमें इस सीजन में एशियन गेम्स और वर्ल्ड चौंपियनशिप की तैयारी के लिए प्रेरित करेगा। हिमांशु ने कहा, अपने पहले सीनियर विश्व कप फाइनल में मुकाबला करना एक शानदार अनुभव था। मुझे खुद पर भरोसा था, अपने कोच के मार्गदर्शन पर भरोसा था और अपनी ताकत पर भरोसा था। मैंने कई जूनियर फाइनल में हिस्सा लिया है, लेकिन अपना पहला सीनियर वर्ल्ड कप पदक जीतना बेहद खास है। सोनम ने इससे पहले 2024 में काहिरा में आईएसएसएफ विश्व कप और नई दिल्ली में आईएसएसएफ वर्ल्ड कप फाइनल में रजत पदक जीता था। आईएसएसएफ विश्व कप ग्रेनेडा में उन्होंने पांचवां स्थान हासिल किया था। 20 साल के हिमांशु के लिए, कांस्य पदक उनका पहला सीनियर आईएसएसएफ विश्व कप पोडियम है। हिमांशु ने इससे पहले 2025 में नई दिल्ली में आईएसएसएफ जूनियर विश्व कप में 10 मीटर एयर राइफल मेन जूनियर इवेंट में स्वर्ण पदक जीता था। इससे पहले उन्होंने एशियन शूटिंग चौंपियनशिप में भी स्वर्ण जीता था। इस कांस्य पदक के साथ आईएसएसएफ वर्ल्ड कप हांगझोऊ में भारत के कुल 4 पदक (1 स्वर्ण, 1 रजत और 2 कांस्य) हो गए हैं।

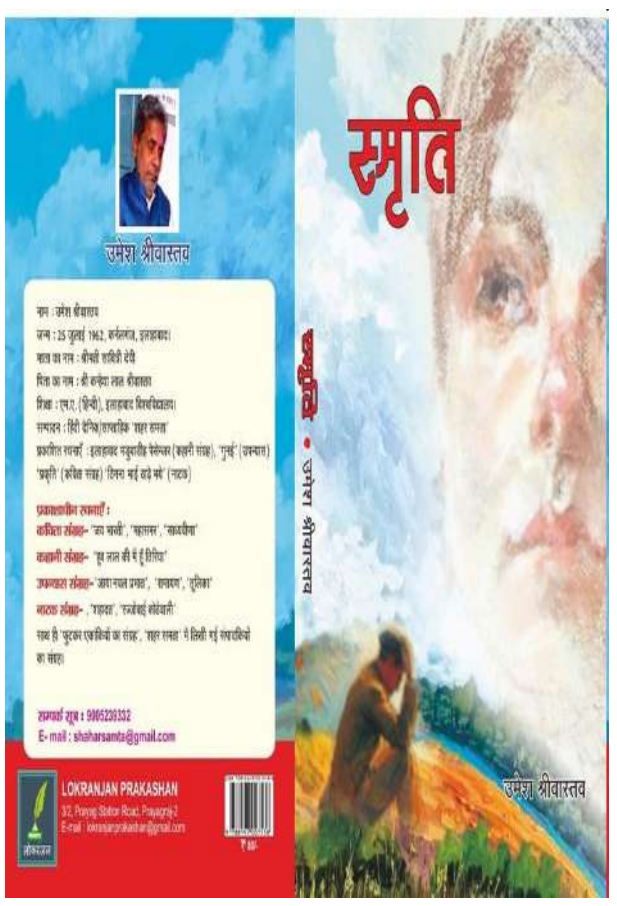

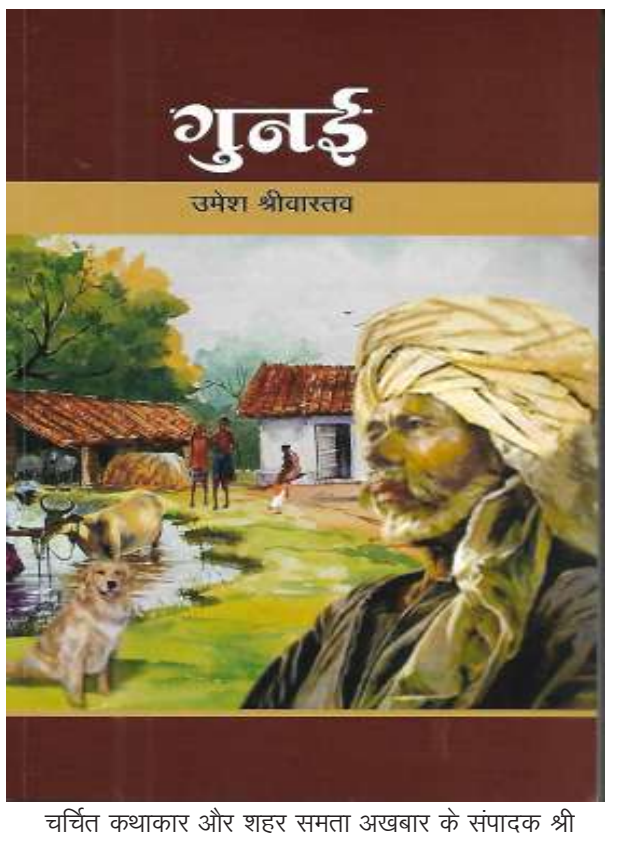

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

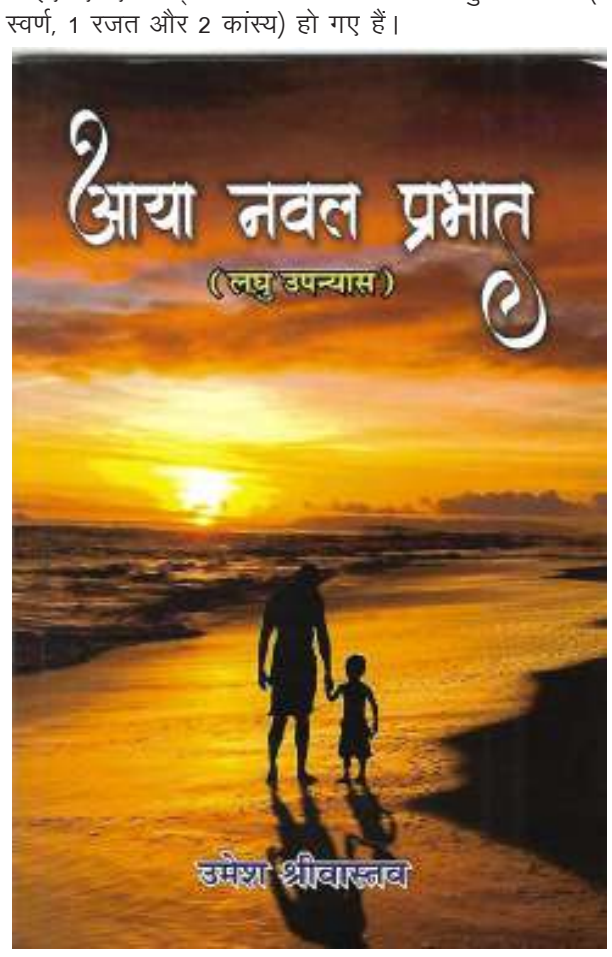

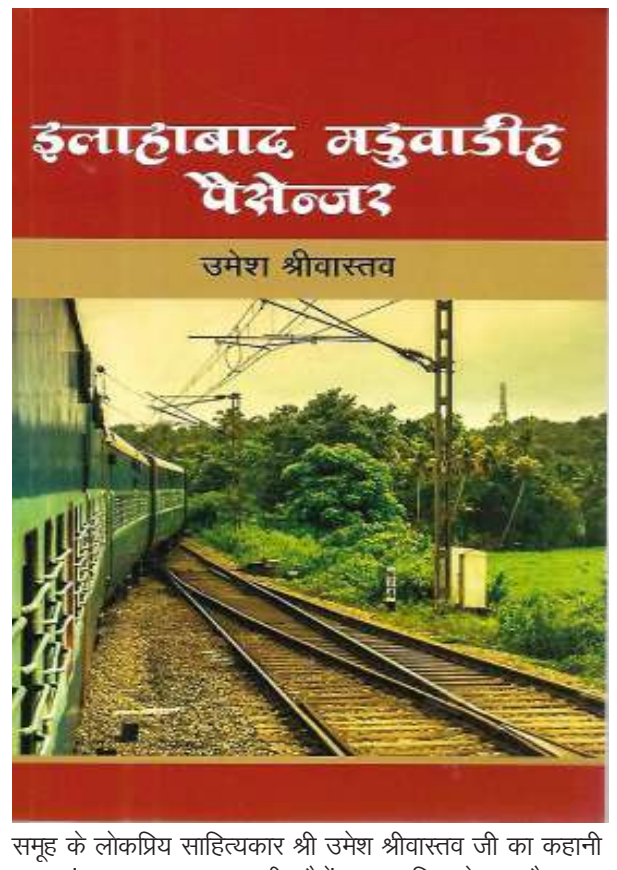

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

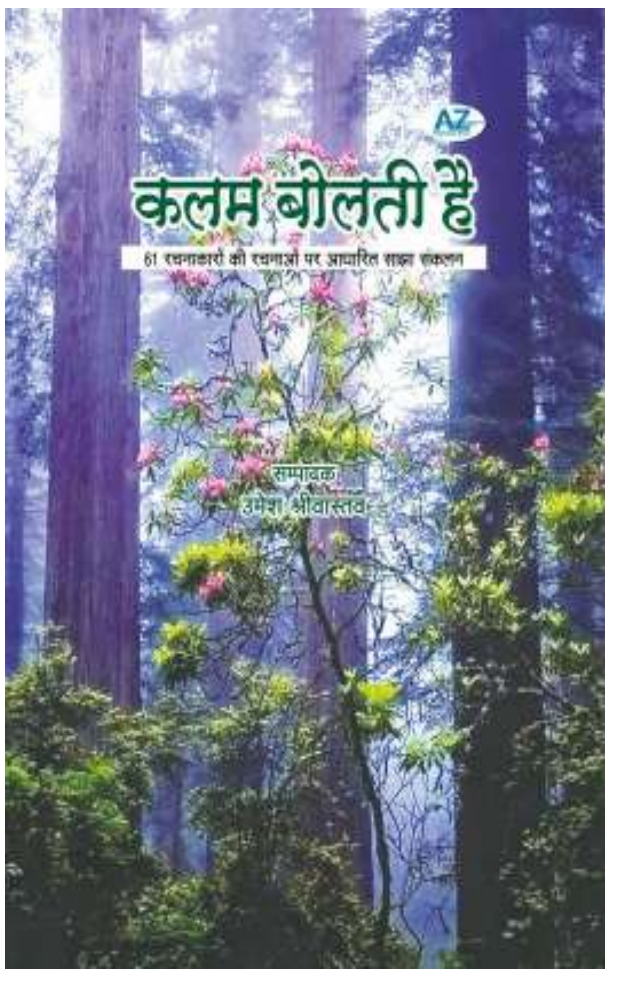

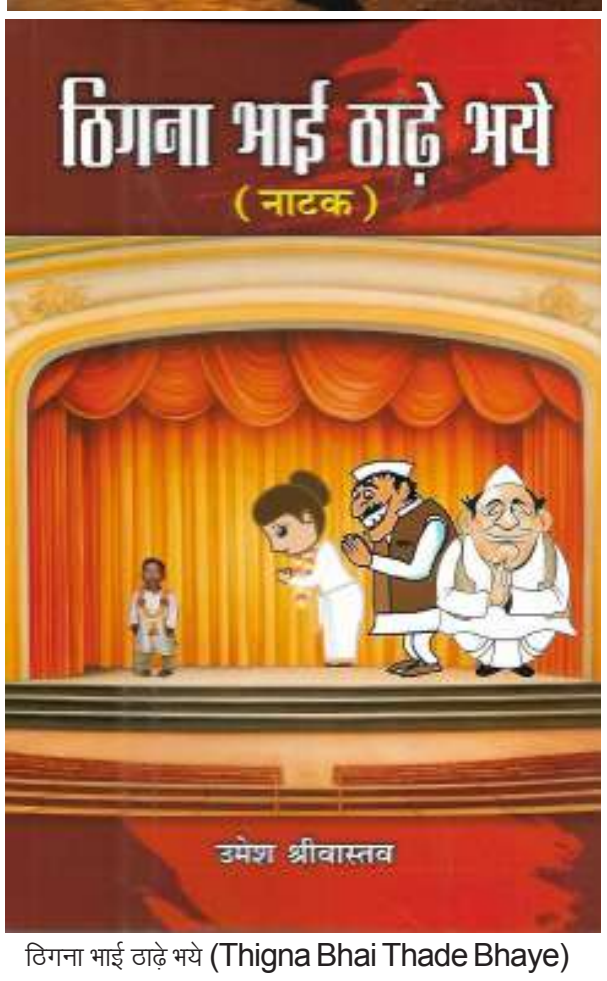

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

ईरान जंग शुरू होने के बाद ट्रंप-नेतन्याहू की पहली बैठक, मतभेदों के बीच क्या है इस्राइल का प्लान ?

यरूशलम/वाशिंगटन, एजेंसी। इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच मंगलवार को बैठक होगी। यह ईरान युद्ध शुरू होने के बाद दोनों नेताओं की पहली मुलाकात होगी। यह बैठक नेतन्याहू के लिए ट्रंप के साथ संबंधों में आई खटास को दूर करने का मौका भी होगी। यह बैठक ऐसे समय में हो रही है, जब दोनों नेता अपने-अपने देशों में बढ़ते दबाव का सामना कर रहे हैं। नेतन्याहू चुनाव का सामना करने वाले हैं और ट्रंप के साथ बिगड़ते संबंधों के कारण भी उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं, ट्रंप पर एक ऐसे युद्ध को खत्म करने का दबाव है, जो जनता के बीच ज्यादा लोकप्रिय नहीं है। इस युद्ध से आर्थिक नुकसान हुआ है और कीमतें बढ़ी हैं। यह सब नवंबर में होने वाले मध्यावधि चुनावों से पहले हो रहा है। व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर बताया कि दोनों नेता इस्राइल-हिजबुल्ला युद्ध को लेकर अमेरिका और लेबनान के बीच हुए समझौते के ढांचे और अब्राहम समझौते के विस्तार पर भी चर्चा करेंगे। सोमवार को पत्रकारों ने जब ट्रंप से पूछा कि क्या ईरान के मुद्दे पर वह और इस्राइली प्रधानमंत्री एक ही राय रखते हैं, तो ट्रंप ने कहा, हमारे बीच थोड़ा अंतर है। लेकिन हां, हम काफी करीब हैं। पिछले कई वर्षों से ट्रंप और नेतन्याहू के संबंध कभी मजबूत तो कभी तनावपूर्ण रहे हैं। हालांकि, पिछले साल जब ट्रंप दोबारा व्हाइट हाउस लौटे तो दोनों नेताओं के बीच गठबंधन पहले से ज्यादा मजबूत दिखाई दिया। फरवरी में जब दोनों देशों ने मिलकर ईरान के खिलाफ जंग शुरू की थी, तब दोनों एकजुट नजर आए थे। उन्होंने कहा था कि उनकी सेनाएं मिलकर ईरान के नेतृत्व को निशाना बना रही हैं और ऐसी सरकार के लिए रास्ता तैयार कर रही हैं, जो पश्चिमी देशों के ज्यादा करीब हो। लेकिन जैसे-जैसे ईरान ने जवाबी कार्रवाई शुरू की। खाड़ी क्षेत्र में अमेरिकी ठिकानों व ऊंची इमारतों पर ड्रोन और मिसाइलों से हमले किए। साथ ही होर्मुज जलडमरूमध्य को बाधित किया। वैसे-वैसे ट्रंप पर युद्ध खत्म करने का दबाव बढ़ता गया। यह दबाव अमेरिका के अंदर और क्षेत्रीय सहयोगियों की ओर से भी आया। इसके बाद नेतन्याहू, ट्रंप के तेहरान के साथ समझौते की कोशिशों के बीच पीछे रह गए। नेतन्याहू ईरान और उसके सहयोगी हिजबुल्ला के खिलाफ लेबनान में भी लड़ाई जारी रखना चाहते थे। इस हफ्ते व्हाइट हाउस में उनकी मुलाकात ऐसे समय में हो रही है, जब ईरान युद्ध और अन्य मुद्दों को लेकर ट्रंप और उपष्ट्रपति जेडी वेंस के साथ मतभेद खुलकर सामने आ गए हैं। पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक अमित सेगल ने सोमवार को इस्राइल के अखबार श्इस्राइल हयोमश में लिखा, अमेरिका इस्राइल को साफ कर रहा है कि जंग की कमान उसके हाथ में है। यह बात सभी के लिए साफ है कि इस्राइल को पीछे की सीट पर बैठा दिया गया है। नेतन्याहू का फोकस किस मुद्दे पर रहेगा? अमेरिका और ईरान के बीच हाल के हफ्तों में फिर बढ़े तनाव के बीच नेतन्याहू ट्रंप के साथ तेहरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़ी इस्राइली खुफिया जानकारी साझा करने की योजना बना रहे हैं। नेतन्याहू की यात्रा से जुड़े एक व्यक्ति ने नाम न बताने की शर्त पर यह जानकारी दी, क्योंकि उसे मीडिया से बात करने की अनुमति नहीं थी। नेतन्याहू ने फॉक्स न्यूज चौनल के कार्यक्रम श्संडे मॉर्निंग फ्यूचर्सश में मारिया बार्टिरोमो के साथ बातचीत की। इसमें उन्होंने कहा कि वह ट्रंप के साथ बैठक में यह सुनना चाहते हैं कि ईरान को लेकर उनके मन में क्या योजना है। नेतन्याहू ने कहा, क्योंकि कई मायनों में आगे कैसे बढ़ना है, यह उनका फैसला है। अगर वह भारी सैन्य कार्रवाई फिर शुरू किए बिना ऐसा कर सकते हैं, तो यह ठीक है। इसमें कोई समस्या नहीं है। लेकिन किसी भी स्थिति में उन्हें अपना परमाणु कार्यक्रम खत्म करना होगा। नेतन्याहू ने इस इंटरव्यू में ईरान को अपने देश पर हमला करने को लेकर चेतावनी भी दी। उन्होंने कहा कि इस्राइल की प्रतिक्रिया बेहद कड़ी होगी। गाजा-लेबनान में दूसरी सेनाओं की तैनाती? हालांकि, नेतन्याहू इसे एक अवसर के रूप में देख रहे हैं। लेकिन उन्हें ट्रंप को यह भरोसा भी दिलाना होगा कि वह गाजा और लेबनान में अमेरिका के कूटनीतिक और पुनर्निर्माण प्रयासों में बाधा नहीं डालेंगे। ट्रंप पहले भी शिकायत कर चुके हैं कि इस्राइली हमलों में बहुत ज्यादा लोग मारे जा रहे हैं। इस्राइल ने हाल में दोनों जगहों पर कुछ कदम उठाए हैं। लेबनान में इस्राइली सेना अब भी दक्षिणी हिस्से के बड़े इलाके में तैनात है। इस्राइल ने एक श्पायलट कार्यक्रमश के तहत कुछ गांवों में लेबनानी सेना की तैनाती को अनुमति देने पर सहमति जताई है। इसका मकसद यह परखना है कि जिन इलाकों में पहले हिजबुल्ला सक्रिय था, वहां लेबनानी सेना सुरक्षा की जिम्मेदारी कितनी प्रभावी ढंग से संभाल सकती है। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि इस्राइल और लेबनान के बीच बातचीत का अगला दौर अगले हफ्ते रोम में होगा। इसमें इस कार्यक्रम को विस्तार देने पर चर्चा होगी। अमेरिका में इस्राइल के समर्थन में आई कमी इस्राइल ने अमेरिका में दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों के समर्थन का एक बड़ा हिस्सा खोया है। खासतौर पर गाजा में उसकी कार्रवाई को लेकर यह समर्थन कम हुआ है। जून में उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने इस्राइली अधिकारियों को चेतावनी दी थी कि दुनिया के नेताओं में ट्रंप ही उनके एकमात्र दोस्त हैं। योजना से जुड़े एक व्यक्ति ने बताया कि वेंस नेतन्याहू के साथ होने वाली बैठक में शामिल हो सकते हैं। इस व्यक्ति ने नाम न बताने की शर्त पर जानकारी दी क्योंकि उसे सार्वजनिक रूप से बोलने की अनुमति नहीं थी। इस महीने की शुरुआत में जारी एपी-एनओआरसी सर्वेक्षण में अमेरिकी वयस्कों के बीच इस्राइल के लिए समर्थन में बड़ी गिरावट सामने आई।

संक्षिप्त

मेलानिया और बैरन ट्रंप के खिलाफ ईरान ने जारी किया धमकी भरा वीडियो, सुरक्षा चिंता बढ़ी

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की प्रथम महिला मेलानिया ट्रंप और उनके बेटे बैरन ट्रंप को निशाना बनाते हुए ईरान से अमेरिका विरोधी प्रचार का एक नया वीडियो सामने आया है।

नए वीडियो में इस्लामी शासन के समर्थकों को राष्ट्रपति ट्रंप की पत्नी की हत्या के लिए उकसाया जा रहा है। यह वीडियो श्मेलानिया ट्रंप को कहां मारेंश नाम से जारी किया गया है। वीडियो में प्रथम महिला की तस्वीरें दिखाई गई हैं। इसमें उनके काफिले और न्यूयॉर्क शहर की कुछ जगहों की तस्वीरें भी शामिल हैं। वीडियो में उन डिजाइनर दुकानों के नाम भी बताए गए हैं, जहां वह खरीदारी करती हैं। वीडियो में दावा किया गया है कि मेलानिया की खरीदारी से जुड़ी ये गतिविधियां दुनियाभर के श्स्वतंत्रता सेनानियोंश के अभियानों के लिए उपयुक्त हो सकती है। वीडियो में कपड़ों को जहरीले रासायनिक पदार्थ से संक्रमित करने की बात कही गई है, जो शरीर की तंत्रिका प्रणाली को नुकसान पहुंचा सकता है। ट्रंप के बेटे को क्या धमकी दी गई? ईस्ट विंग और सीक्रेट सर्विस ने इस मामले पर तत्काल कोई टिप्पणी नहीं की है। वीडियो के अंत में 20 वर्षीय बैरन ट्रंप को भी धमकी दी गई है। वीडियो में कहा गया, यह तो बस शुरुआत है। बैरन ट्रंप, हमारा इंतजार करो। प्रथम महिला और बैरन दोनों की सुरक्षा के लिए हर समय सीक्रेट सर्विस के जवान तैनात रहते हैं। ट्रंप के सभी निवास स्थानों (व्हाइट हाउस, न्यूयॉर्क स्थित ट्रंप टावर, बेडमिंस्टर गोल्फ क्लब और फ्लोरिडा स्थित मार-ए-लागो एस्टेट) की कड़ी सुरक्षा है। तेहरान में लगे होर्डिंग ईरान के साथ युद्ध शुरू होने के बाद से राष्ट्रपति ट्रंप के परिवार को लगातार निशाना बनाया जाता रहा है। पिछले हफ्ते तेहरान में कई जगहों पर ऐसे होर्डिंग लगाए गए, जिनमें राष्ट्रपति ट्रंप और उनके परिवार के सदस्यों को मारने की बात कही गई थी। इसमें मेलानिया और उनके सभी बच्चों डॉन जूनियर, इवांका, एरिक, टिफनी और बैरन के नाम शामिल थे। इन होर्डिंग पर लिखा था- खून के बदले खून। सार्वजनिक कार्यक्रमों से मेलानिया ने बनाई दूरी? मेलानिया ट्रंप ने इस महीने ज्यादा सार्वजनिक कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं लिया है। वह शुक्रवार रात आयोजित व्हाइट हाउस प्रेस कॉन्फ्रेंस के रात्रिभोज में शामिल नहीं हुई थीं। उनके एक करीबी सूत्र ने न्यूयॉर्क पोस्ट को बताया कि उनके कार्यक्रम पहले से तय थे, इसलिए वह इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाईं। ईरान की धमकी के कारण बदला ट्रंप ने विमान? राष्ट्रपति ट्रंप को भी ईरान से धमकियों का सामना करना पड़ा है। उन्होंने माना है कि वह ईरान के निशाने पर हैं। यह बात तब सामने, आई जब अमेरिका और इस्राइल के एक अभियान में ईरान के सर्वोच्च नेता और शासन से जुड़े कई लोगों को निशाना बनाया गया। इस महीने की शुरुआत में राष्ट्रपति ट्रंप को अपना नया एयर फोर्स वन विमान छोड़कर पुराने विमान से तुर्किये से रवाना होना पड़ा था। वह तुर्किये में नाटो की बैठक में शामिल होने गए थे। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, ऐसा ईरान से मिली धमकियों के कारण किया गया। उन्होंने न्यूयॉर्क पोस्ट को बताया कि अगर ईरान उन्हें मारने की साजिश में सफल होता है तो उन्होंने निर्देश दे दिए हैं और इसके गंभीर परिणाम होंगे। उन्होंने कहा, मैं लंबे समय से उनकी सूची में हूं। हम इसी स्थिति से निपट रहे हैं। बस एक बात है, मैंने निर्देश दे दिए हैं कि अगर मेरे साथ कुछ होता है तो उन्हें ऐसे स्तर पर बमबारी करके जवाब दिया जाए, जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा होगा।

ट्रंप ने फिर छेड़ी EV बनाम पेट्रोल कार की बहस?: पूर्व राष्ट्रपति बाइडन की नीति पर साधा निशाना, दी बड़ी चेतावनी

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर इलेक्ट्रिक वाहन (EV) नीति पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओं को इलेक्ट्रिक और इंटरनल कंबशन इंजन (पेट्रोल-डीजल) वाले वाहनों में अपनी पसंद से चुनाव करने की पूरी आजादी होनी चाहिए। ट्रंप का दावा है कि उनकी सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन की म्ट नीति और ईंधन दक्षता मानकों को समाप्त कर अमेरिकी ऑटो उद्योग को नुकसान से बचाया। ट्रंप ने म्ट नीति पर क्या कहा? मिशिगन में जनरल मोटर्स के मिलफोर्ड प्रूविंग ग्राउंड के दौरे के दौरान ट्रंप ने कहा कि उन्होंने अपने कार्यकाल के पहले दिन ही बाइडन की इलेक्ट्रिक वाहन नीति को खत्म कर दिया था। उनके अनुसार, यदि वह नीति जारी रहती तो अमेरिकी ऑटो उद्योग को भारी नुकसान होता। उन्होंने कहा कि यदि कोई इलेक्ट्रिक कार खरीदना चाहता है तो उसके लिए विकल्प मौजूद हैं, लेकिन यदि कोई पेट्रोल-डीजल या अन्य प्रकार का वाहन खरीदना चाहता है तो उसे भी वही स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। रोजगार को लेकर ट्रंप ने क्या चिंता जताई? ट्रंप ने कहा कि इलेक्ट्रिक कारों के निर्माण में पारंपरिक वाहनों की तुलना में कम कर्मचारियों की जरूरत पड़ती है। उन्होंने कहा कि इससे मिशिगन जैसे उन राज्यों में रोजगार प्रभावित हो सकता है, जहां बड़ी संख्या में लोग ऑटोमोबाइल उद्योग पर निर्भर हैं। ट्रंप ने कहा कि उन्होंने बाइडन प्रशासन के कॉरपोरेट एवरेज फ्यूल इकॉनमी (ब।थ्) मानकों को भी समाप्त कर दिया। उनके अनुसार, ये मानक अमेरिकी वाहन कंपनियों को दिवालिया होने की ओर ले जा सकते थे और इंटरनल कंबशन इंजन वाले वाहनों के भविष्य पर भी खतरा पैदा कर सकते थे।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर. 9190052 39332
.919450482227

अब फ्रांस पर क्यों भड़का अमेरिका ?: यूएनएससी की बैठक छोड़ क्यों निकले ट्रंप के राजनयिक, दोनों सहयोगियों में ठनी

संयुक्त राष्ट्र । अमेरिका के राजनयिक सोमवार को संयुक्त राष्ट्र में उस समय बैठक से बाहर निकल गए, जब फ्रांस के प्रतिनिधि अमेरिका के मानवाधिकार रिकॉर्ड को लेकर ट्रंप प्रशासन की आलोचना कर रहे थे। फ्रांस अमेरिका का करीबी यूरोपीय सहयोगी देश रहा है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की यूक्रेन पर हुई बैठक के दौरान अचानक यह नजारा देखने को मिला। यह कदम संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार प्रमुख वोल्कर तुर्क को एक और चार साल का कार्यकाल देने के अमेरिकी विरोध के बाद आया। शुक्रवार को तुर्क को दोबारा नियुक्त किए जाने के प्रस्ताव को भारी समर्थन मिला था, जिसमें फ्रांस भी शामिल था। अमेरिका का बैठक से बाहर निकलना केवल राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके फ्रांसीसी समकक्ष इमैनुएल मैक्रों के बीच बढ़ते तनाव को नहीं दिखाता, बल्कि अमेरिका और यूरोप के बीच बढ़ती दूरियों को भी दर्शाता है। इस तनाव के पीछे कई मुद्दे हैं। इनमें ट्रंप की नाटो के प्रति प्रतिबद्धता को लेकर उठ रहे सवाल, यूरोप में अमेरिकी सैनिकों की तैनाती में संभावित बदलाव और ग्रीनलैंड पर नियंत्रण की उनकी इच्छा शामिल है। ग्रीनलैंड नाटो सदस्य देश डेनमार्क का हिस्सा है। ट्रंप ने शिकायत की है कि यूरोपीय देशों ने उनसे मशविरा किए बिना ईरान युद्ध के दौरान अमेरिका का साथ नहीं दिया। इस तनाव के बीच फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों यूरोप की सैन्य ताकत बढ़ाने और परमाणु सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। ब्रिटेन के साथ फ्रांस यूरोप की दो परमाणु शक्तियों में से एक है। अमेरिका ने फ्रांस पर क्या आरोप लगाया? सोमवार को कुछ देर के लिए बैठक से बाहर निकलने के बाद अमेरिका के उप राजदूत डैन नेग्रिया ने फ्रांस पर नैतिकता का दिखावा करने और मानवाधिकार समेत हर मुद्दे पर दुनिया को उपदेश देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि अमेरिका हर उस संघर्ष में फ्रांस के साथ खड़ा रहा है, जहां उसकी श्आजादी खतरे में पड़ीश्और उसने दोस्ती व आपसी सम्मान के कारण फ्रांस के दिखावे को बर्दाश्त किया। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। वॉकआउट की वजह क्या थी? अमेरिका के इस कदम की वजह शुक्रवार को फ्रांस के संयुक्त राष्ट्र मिशन जिनेवा की ओर से किया गया एक सोशल मीडिया पोस्ट बताया जा रहा है। इस पोस्ट में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख वोल्कर तुर्क के दूसरे कार्यकाल की अमेरिका की ओर से विरोध किए जाने की आलोचना की गई थी। महासभा में वोल्कर तुर्क के पक्ष में 144 वोट पड़े, 10 देशों ने विरोध किया और 13 देशों ने मतदान से दूरी बनाई। अमेरिका विरोध करने वाले देशों में शामिल था। फ्रांस के मिशन ने सोशल मीडिया पर लिखा, अमेरिका कभी मानवाधिकारों का प्रतीक हुआ करता था। अब ऐसा नहीं है। आज वह उत्तर कोरिया, निकारागुआ, माली और रूस के साथ खड़ा है और अलग-थलग पड़ गया है। अब दुनिया उसकी बात नहीं सुनती। अमेरिका ने फ्रांस के बयान पर क्या कहा? संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका के राजदूत माइक वॉल्ट्ज ने एक्स पर जवाब देते हुए फ्रांस पर श्दुनिया के कुछ सबसे खराब मानवाधिकार उल्लंघन करने वालों को बचानेश का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि फ्रांस ने ऐसे व्यक्ति के पक्ष में मतदान किया, जो अमेरिका, ब्रिटेन और इस्राइल जैसे स्वतंत्र व संप्रभु लोकतंत्रों को लगातार उपदेश देता रहा है। वहीं, वह दुनिया के सबसे दमनकारी देशों के साथ करीबी संबंध बनाए हुए है। वोल्कर तुर्क की भूमिका क्यों अहम है? संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख का पद अपने आप में काफी चुनौतीपूर्ण है।

अमेरिका: शरण मांगने वालों के लिए नया नियम लागू, अब कई मामलों में बिना इंटरव्यू सीधे कोर्ट भेजे जाएंगे आवेदन

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका ने शरण मांगने वाले कुछ प्रवासियों के लिए नया नियम लागू किया है। यह नियम मंगलवार से तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है। इसके तहत कुछ मामलों में अमेरिकी नागरिकता एवं आव्रजन सेवा (यूएससीआईएस) शरण आवेदन करने वालों का इंटरव्यू लिए बिना ही उनके आवेदन सीधे आप्रवासन अदालत भेज सकेगी। अमेरिकी सरकार का कहना है कि इस बदलाव का मकसद शरण से जुड़े लंबित मामलों का बोझ कम करना और असली जरूरतमंद लोगों के मामलों का जल्द निपटारा करना है। फिलहाल यूएससीआईएस के पास करीब 14 लाख (1.4 मिलियन) शरण आवेदन लंबित हैं। यूएससीआईएस के निदेशक जोसेफ एडलो ने कहा कि अमेरिका की शरण व्यवस्था उन लोगों की सुरक्षा के लिए है, जिन्हें वास्तव में अपने देश में उत्पीड़न का डर है। नया नियम यह सुनिश्चित करेगा कि सरकारी संसाधनों का इस्तेमाल ऐसे वास्तविक मामलों के निपटारे में हो, न कि उन लोगों के लिए जो व्यवस्था का गलत फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। अभी तक जो लोग अमेरिका में रहते हुए सकारात्मक शरण के लिए आवेदन करते थे और जिनके खिलाफ निष्कासन की कार्रवाई नहीं चल रही होती थी, उनका आवेदन पहले यूएससीआईएस अधिकारी सुनते थे। अगर आवेदन खारिज होता था, तो मामला इमिग्रेशन जज के पास जाता था, जहां दोबारा पूरी सुनवाई होती थी। नए नियम के बाद यूएससीआईएस चाहे तो ऐसे मामलों में बिना इंटरव्यू लिए ही आवेदन सीधे आप्रवासन जज के पास भेज सकती है। इससे एक अतिरिक्त प्रक्रिया खत्म होगी और मामलों के निपटारे में लगने वाला समय कम होगा। यह बदलाव केवल अफर्मेटिव असाइलम मामलों पर लागू होगा। जिन लोगों के खिलाफ पहले से निष्कासन की कार्रवाई चल रही है और जो अदालत में श्डिफेंसिव असाइलमश्का दावा करते हैं, उनके मामलों की प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं किया गया है। सरकार ने क्या कहा? यूएससीआईएस का कहना है कि मौजूदा व्यवस्था में कई लोगों को शरण के लिए दो बार सुनवाई का अवसर मिल जाता था, जिससे पूरी प्रक्रिया लंबी हो जाती थी। नए नियम से यह समय कम होगा और लंबित मामलों का बोझ घटाने में मदद मिलेगी। अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग के जनरल काउंसल जेम्स पर्सिवल ने कहा कि लंबे समय से कुछ लोग शरण प्रणाली का इस्तेमाल केवल समय बढ़ाने और काम करने की अनुमति हासिल करने के लिए कर रहे थे। उनका कहना है कि जानबूझकर मामलों में देरी करना प्रभावी आव्रजन व्यवस्था के सामने सबसे बड़ी चुनौती है।

1986 के बाद सबसे बड़ा बदलाव: अमेरिका में H-1बी वीजा होल्डर्स वाला बिल पेश, भारतीयों को कैसे मिलेगा फायदा ?

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इमिग्रेशन कानून को और सख्त कर रहे हैं। इस बीच एक वरिष्ठ डेमोक्रेटिक सीनेटर ने लाखों लंबे समय से अमेरिका में रह रहे लोगों को स्थायी रेजिडेंसी का रास्ता देने की कोशिश फिर से शुरू की है। इन लोगों में एच-1बी वीजा होल्डर्स भी शामिल हैं। सीनेटर एलेक्स पैडिला ने क्या कहा?

कैलिफोर्निया के सीनेटर एलेक्स पडिला ने कहा कि उनका प्रस्ताव एक इमिग्रेशन नियम को मॉडर्नाइज करेगा जिसे 1986 से अपडेट नहीं किया गया है। उनके ऑफिस से जारी जानकारी के अनुसार, इससे आठ मिलियन से ज्यादा लोगों को फायदा हो सकता है। इमिग्रेशन एक्ट के नियम क्या? बता दें, 1929 के इमिग्रेशन एक्ट के रिन्यूइंग इमिग्रेशन नियम अप्रवासी को कानूनी स्थायी रेजिडेंट स्टेटस के लिए अप्लाई करने की इजाजत देंगे। इसके लिए शर्त ये है कि आवेदन करने से पहले आवेदक कम से कम सात साल तक लगातार अमेरिका में रहे हों। इसके अलावा, आवेदक का कोई आपराधिक रिकॉर्ड भी नहीं होना चाहिए और उन्हें ग्रीन कार्ड पात्रता की बाकी सभी मौजूदा जरूरतें पूरी करनी होंगी। यह प्रस्ताव ड्रीमर्स (बचपन में अमेरिका लाए गए अप्रवासी), अस्थायी प्रोटेक्टेड स्टेटस (टीपीएस) धारकों, आवश्यक सेवाओं से जुड़े कर्मचारियों और लंबे समय से वीजा पर रह रहे लोगों के बच्चों को कवर करेगा। यह उन उच्च-कुशल पेशेवरों के लिए भी राहत का रास्ता खोल सकता है, जिनमें एच-1बी वीजा धारक शामिल हैं और जो वर्षों से रोजगार-आधारित ग्रीन कार्ड का इंतजार कर रहे हैं। भारत को मिलेगा लाभ?

इस प्रस्ताव का भारतीय पेशेवरों के लिए विशेष महत्व हो सकता है। एच-1बी वीजा धारकों में भारतीयों की बड़ी हिस्सेदारी है और रोजगार-आधारित ग्रीन कार्ड पर लागू देशवार सीमा (कंट्री कैप) के कारण उन्हें स्थायी निवास (ग्रीन कार्ड) के लिए अक्सर कई वर्षों तक इंतजार करना पड़ता है। पडिला ने कहा, श्एक साल पहले मैंने यह विधेयक ट्रंप प्रशासन द्वारा मेहनती अप्रवासियों के साथ किए जा रहे कठोर व्यवहार का विरोध करने के लिए पेश किया था।श उन्होंने कहा, श्तब से राष्ट्रपति ट्रंप के डर और दहशत फैलाने वाले अभियान में और तेजी आई है। जिन परिवारों ने इस देश में अपनी जिंदगी बसाई है, वे भी लगातार अनिश्चितता के माहौल में जी रहे हैं। गृह सुरक्षा सचिव को क्या अधिकार है?

यह विधेयक इमिग्रेशन एंड नेशनलिटी एक्ट की धारा 249, में संशोधन करेगा। जिसे श्रजिस्ट्रीश के नाम से जाना जाता है। इस प्रावधान के तहत गृह सुरक्षा सचिव को यह अधिकार है कि वह निर्धारित तारीख से अमेरिका में रह रहे और अन्य पात्रता शर्तें पूरी करने वाले कुछ लोगों को स्थायी निवास (ग्रीन कार्ड) दे सकें। अभी पात्रता कटऑफ 1 जनवरी, 1972 है। पैडिला का कानून उस तय तारीख को सात साल की रोलिंग जरूरत से बदल देगा। यह बदलाव लागू होने के 60 दिन बाद लागू होगा। सीनेट डेमोक्रेटिक व्हिप डिक डर्बिन इस कदम को को-लीड कर रहे हैं। 14 दूसरे सीनेटरों ने को-स्पॉन्सर के तौर पर साइन किए हैं। कैलिफोर्निया की प्रतिनिधि जो लोफग्रेन हाउस में साथी कानून को लीड कर रही हैं। अखिरी बार कब हुआ था संशोधन?

अमेरिकी कांग्रेस ने 1929 में पहली बार श्रजिस्ट्रीश प्रावधान लागू किया था और अब तक इसमें चार बार संशोधन किया जा चुका है। इसका सबसे हालिया संशोधन 1986 में राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के कार्यकाल के दौरान हुआ था। इमिग्रेशन पर गहरे पार्टी मतभेदों के बीच कांग्रेस में इस प्रस्ताव का रास्ता पक्का नहीं है।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।